

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

घेरा

बादल सरकार



रूपान्तर : प्रतिभा अग्रवाल

ब्रेख्त के "काकेशियन चाक सरकल" के इस रूपान्तर 'घेरा'
को खेलने के लिए अनुवादक की अनुमति लेना अनिवार्य है।

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद-१ द्वारा प्रकाशित

●

प्रथम संस्करण : १९८२

●

●

जय हनुमान प्रिंटिंग प्रेस,
१-सी बाई का बाग,
इलाहाबाद-३ द्वारा मुद्रित

मूल्य : १५.००

श्रद्धेय बादल दा को
जिनके अनेक नाटकों का
अनुवाद करने का सुअवसर
मुझे प्राप्त हुआ है।

अनुवादक की ओर से

'घेरा' ब्रेख्त के विश्वविख्यात नाटक 'काकेशियन चाक सरकल' का भारतीय रूपांतर है। विश्व की अनेक भाषाओ में इस नाटक के अनेकानेक अनुवाद हो चुके हैं, बांग्ला तथा हिंदी में भी एकाधिक अनुवाद उपलब्ध हैं। अत: यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि एक और रूपांतर क्यों, एक और अनुवाद क्यो? कारण बहुत स्पष्ट है। कोई भी महान् कृति विभिन्न पाठको को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रभावित करती है, आकृष्ट करती है। एक ही भाषा में किये गये विभिन्न अनुवादो की भी अपनी-अपनी विशिष्टता होती है, अपना अलग रस होता है। बादल सरकार द्वारा किया गया बाग्ला रूपातर अवश्य ही सबसे अलग है, विशिष्ट है। नाटक के कथ्य को यथासंभव भारतीय बाना पहनाया गया है, देखने पर मूल आत्मा भारतीय प्रतीत होती है।

'गडी' (बाग्ला शीर्षक) की प्रथम प्रस्तुति १२ मई सन् १९७८ को बादल सरकार के निर्देशन में उनके ही दल शताब्दी द्वारा थियोसोफिकल सोसाइटी हाल में की गई। अंगनमंच पर बिना किसी सेट, सीन-सीनरी आदि के मचित यह प्रस्तुति अत्यत प्रभावपूर्ण थी, मन को बरबस भिगो देती थी। रूपांतर मुक्त छंद में किया गया है और हिंदी अनुवाद भी मुक्त छंद में ही प्रस्तुत किया जा रहा है। अभी तक इसका हिंदी में मंचन नही हुआ है, आशा है रगकर्मी इसे रोचक पायेंगे और शीघ्र ही प्रस्तुति करेंगे।

२३३/५ जगदीशचन्द्र बोस रोड
कलकत्ता—७०००२०

—प्रतिभा अग्रवाल

निर्देशकीय

मैंने "काकेशियन चाक सरकल" का बांग्ला में रूपातर इसलिए नहीं किया कि मैं ब्रेख्त का नाटक करना चाहता था वरन् इसलिए किया क्योंकि मुझे नाटक आज के अपने देश के संदर्भ में बडा सामयिक एवं सार्थक लगा। इसी दृष्टि से मेरे दल शताब्दी ने मेरे ही निर्देशन मे इसका मंचन भी किया। यही कारण है कि मूल नाटक का बहुत कुछ हमने बिना दुविधा के छोड दिया (मेरी प्रस्तुति में केवल ६५ मिनट समय लगता है) और हमने "गडी" को अपने ढंग से प्रस्तुत किया। बहुत से ब्रेख्त पडित हमारे प्रयोग से काँप उठे थे—स्वाभाविक था।

हमने इसे अपनी "अंगनमच" शैली में प्रस्तुत किया। अंगनमच अंतरग थियेटर है, इसमें प्रस्तुति को इच्छानुसार रूप देने की छूट रहती है, दर्शक एवं अभिनेता एक ही तल पर स्थित रहते हैं। आम तौर पर दर्शक चारो ओर बैठते थे। केवल एक ओर कुछ दर्शको के पीछे एक रास्ता छोड दिया जाता था जो अभिनय-स्थल का ही एक भाग होता था। खुले में बडी संख्या में दर्शको के सामने करने पर हम इसमें आवश्यक परिवर्तन कर लिया करते थे। एक गाँव में प्रदर्शन के समय तो करीब पाँच हज़ार दर्शक उपस्थित थे।

हमने केवल पन्द्रह अभिनेताओं को लिया था अत: सभी को कई-कई भूमिकाओ में अभिनय करना पड़ता था। हमने एक ओर अलग से निष्क्रिय गायको को नही बैठाया था। गाने के बदले मुक्तछद की कविताओं का इस्तेमाल किया गया था जिनका विभिन्न भूमिकाओ में अभिनय करनेवाले कलाकार ही पाठ किया करते थे। सेट बिलकुल नही था। अभिनेता अपने शरीर द्वारा ही झरना, पुल, झोंपडी आदि का आभास देते थे।

आधुनिक भारतीय वेशभूषा का इस्तेमाल किया गया था पर चूंकि कलाकारो को बार-बार भूमिकायें बदलनी पडती थी इसलिए उनकी वेशभूषा में कुछ सामान्य परिवर्तन कर दिया जाता था जिससे दर्शको को किसी प्रकार की उलझन न हो। विभिन्न भूमिकाओं में रूपातरण, दृश्य एव मंच सज्जा आदि का परिवर्तन अत्यत त्वरित गति से पलक झपकते करना पड़ता था ताकि नाटक के प्रवाह मे किसी प्रकार की रुकावट न आये।

हमने इस बात का विशेष खयाल रखा था कि कही ऐसा न हो कि नौकरानी के प्रति भावनात्मक सहानुभूति नाटक के मूल उद्देश्य को ही न ढक दे। हम लोग इस देश में बहुत जल्दी इसके शिकार हो जाते हैं, तत्काल आँसू बहाने लगते हैं खासकर यदि उसका सम्बन्ध मातृ रूप से हो।

हम लोगो को नाटक तैयार करने में करीब ६ महीने लगे थे और अब तक (फरवरी ८३) इसके ६६ प्रदर्शन हो चुके हैं।

—बादल सरकार

दृश्यबंध एवं उपयोग मे आनेवाली वस्तुएँ

घेरा बादल सरकार की एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें लेखक ने कल्पना के विचरण के लिए पूरी छूट दी है। दृश्य-बंध एवं मंचसज्जा रख भी सकते हैं और उनके बिना मूक अभिनय द्वारा स्थल एवं वस्तुओ का अनुभव करा सकते हैं। वैसे नाटक की सरचना शारीरिक-अभिनय को दृष्टि में रखते हुए की गयी है।

निम्नलिखित वस्तुएँ अनिवार्य हैं—छोटा रेशमी कुर्त्ता, बडा रेशमी कुर्त्ता, बड़ा फटा कुर्त्ता, राजा का चोगा, विचारक का चोगा, चोगा लटकाने के लिए स्टैंड, खाट या चौकी, कुर्सी, दो-एक बैठने की सीटें, दो चादर, दो बांस, मोटी-पतली रस्सी, तावीज।

मुख्य पात्र

सूबेदार
सूबेदारनी
विपुल वर्मा
सुमन
सोमा
कीर्तिचाँद
शिवदास

इनके अतिरिक्त कम से कम दस पुरुष एवं तीन महिला कलाकार जो आवश्यकतानुसार सूत्रधार, सिपाही, हवलदार, दास-दासी, स्थपति, राजकर्मचारी, वैद्य, किसान, किसान की स्त्री, भाई, भाभी, मौसी, गाँव वाले, वकील, फरियादी, गवाह आदि की विभिन्न भूमिकाओं में अभिनय कर सकें।

(दो सूत्रधारों का प्रवेश। एक कोने में दो सिपाही सूबेदार के महल के दरवाजे पर पहरा दे रहे हैं। दूसरे कोने में उम्मीदवार और भिखारियों का दल इकट्ठा है)

सूत्रधार-१ : राज्य की राजधानी में राजसिंहासन पर विराजमान महाराजा—

सूत्रधार-२ : सूबे मे कुर्सियों पर स्थित महाराजा के शासनकर्त्ता—सूबेदार।

सूत्रधार-१ : वे शासन चलाते है।

सूत्रधार-२ : कर वसूलते है।

सूत्रधार-१ : खाते पीते और गला काटते है—

सूत्रधार-२ : इनमें सबसे जंडैल है सूबेदार।

सूत्रधार-१ : रूपनगर सूबे का सूबेदार अग्निप्रताप सिंह।

(नेपथ्य की ओर मुँह करके तुरही की ध्वनि)

सूत्रधार-२ : राज्य के और किसी सूबेदार की घुड़साल मे इतने घोड़े न थे। (घोडे की हिनहिनाहट)

सूत्रधार-१ : दरबार में इतने उम्मीदवार न थे—

(उम्मीदवार और भिखारी एक साथ याचना करते हुए मंच के बीच की ओर बढ़ते हैं। महल के भीतर से एक उच्च पदस्थ कर्मचारी आकर खड़ा होता है)

सूत्रधार-२ : किले मे इतने सिपाही न थे—

(दोनो सिपाही "हाइ हप" करके पैर से पैर मारते हैं)

सूत्रधार-१ : दरवाजे पर इतने भिखारी न थे।

भिखारिणी : हमारा बेटा भूख से मरा जा रहा है बेटा, दो मुट्ठी चावल—

उम्मीदवार-१ : धर्मावतार, मेरा भाई निर्दोष है, दुष्टों ने झूठमूठ उसका—

उम्मीदवार-२ : हुजूर, हमारे गाँव मे पानी की बड़ी तकलीफ है। यदि एक कुआँ—

उम्मीदवार-३ : मालिक कर रोज-रोज बढ़ा जा रहा है, दो जून खाने का ठिकाना नही हो पाता—

उम्मीदवार स्त्री : हुजूर, हमारे बेटे को फौज से छोड़ देने का हुकुम दे दीजिए। बस, वही एक लड़का बचा है—

(कर्मचारी सबका आवेदन लेता है, भीख चारों ओर बिखेर देता है। उसके आदेश पर सिपाही उम्मीदवार और भिखारियो के दल को एक ओर भगा देते हैं और वही रोक रखते हैं। दोनो सूत्रधार उम्मीदवारों के दल में मिल गये थे। अब बाहर आ जाते हैं)

सूत्रधार-१ : जडैल सूबेदार।

सूत्रधार-२ : उसकी जंडैल सुंदरी पत्नी।

सूत्रधार-१-२ : उनका सुंदर गोलमटोल बेटा।

सूत्रधार-१ : आज त्योहार के दिन जंडैल सूबेदार।

सूत्रधार-२ : अपने काले प्रासाद से निकलकर सपरिवार।

सूत्रधार-१ : मंदिर की ओर चला है पूजा करने।

(तुरही का स्वर। सूबेदार, सूबेदारनी, गोदी में शिशु लिए धात्री और वैद्य का बड़ी धूमधाम से प्रवेश। शिशु वास्तव में रेशम का एक सुन्दर कुर्ता है, और कुछ नहीं)

उम्मीदवार-१ : देखे, देखें, लड़का है न?

भिखारिणी : एं एं; धक्का क्यों दे रहा है मरदुए?

उम्मीदवार-१ : लड़का कैसा गोरा गोरा है, है न?

उम्मीदवार-२ : राजा रजवाड़ों का लड़का गोरा नही तो क्या तेरी तरह काला कलूटा होगा ?

सूत्रधार-२ : सूबेदार का वंशधर आज पहली बार राजमहल से बाहर आया है।

सूत्रधार-१ : धाई की गोदी मे।

सूत्रधार-२ : दोनो ओर दो वैद्य चौबीस घंटा साथ रहते है।

सूत्रधार-१ : देखिए न, पराजित जमीदार विपुल वर्मा भी—

(विपुल वर्मा आता है)

विपुल : सूबेदार की जय हो। नमस्कार रानी माँ। आहा हा, आपका बेटा है न ? हूबहू सूबेदार पर पड़ा है। सब कुशल मंगल ? समाचार सब अच्छा है न ?

सूबेदारनी : एक समाचार जरूर अच्छा है कि आपके भाई अंत मे राजी हो गये है।

विपुल : होंगे ही होगे ही, हुए बिना जायेंगे कहाँ ? पर किस बात पर राजी हुए हैं ?

सूबेदारनी : वाह, कब से दक्षिण के महल की बात नही कहती आ रही हूँ ? अब जाकर हाथ लगा है। उधर की ओर गदी बस्ती हटाकर बगीचा तैयार होगा।

विपुल : वाह—वाह एक के बाद एक कई खराब खबरें सुनने के बाद यह पहली अच्छी खबर सुनने को मिली।

सूबेदार : खराब खबरे क्या सुनी ? कौन-कौन सी ?

विपुल : सुनने मे आया है कि लड़ाई की खबर अच्छी नहीं है।

सूबेदार : (उपेक्षा से) ओ, लड़ाई।

विपुल : सुना, बहादुरी के साथ पीछे हट रहे है। पर लड़ाई में यह सब चलता ही रहता है, इससे कोई खास बात साबित नही होती।

सूबेदारनी : यह क्या, भानु खाँस रहा है (वैद्यो की ओर गुस्से से देखते हुए) भानु खाँस रहा है।

वैद्य-१ : मैने कहा था—नातिशीतोष्ण जल्र से स्नान कराने की अपेक्षा ईषदूष्ण जल ठीक होगा।

वैद्य-२ : किन्तु गुरु त्रिलोकेश्वर वैद्यराज जी महाराज का निश्चित विधान है—नातिशीतोष्ण। असल मे रात मे पश्चिम की ओर की खिड़की खुली रखना ठीक नही था, मै पहले से ही जानता था।

सूबेदारनी : आप लोगों को इन बातों का ध्यान रखना चाहिए न ? लगता है बुखार आ रहा है।

वैद्य-१ : डर की कोई बात नही है। अब से स्नान का जल ईषदूष्ण रहेगा। (दूसरे वैद्य की ओर गुस्से से देखता है)

वैद्य-२ : डर की कोई बात नही है। अब से रात मे पश्चिम की खिड़की बंद रहा करेगी। (पहले वैद्य की ओर गुस्से से देखता है)

विपुल : ठीक है, ठीक है। हमारे पिताजी कहा करते थे—पेट मे दर्द हो रहा है ? तो लगाओ वैद्य को पीछे से दस बेंत। उनके पिता कहा करते थे—वैद्य को गरदनिया देकर निकाल बाहर करो। और हम बहुत करेंगे तो वैद्य को बरखास्त कर देगे। दिन-दिन अधःपतन हो रहा है।

सूबेदार : चलो, मंदिर चलो। यहाँ ठंडी हवा और नुकसान करेगी।

विपुल : हाँ हाँ, चलिए ···चलिए।

(विपुल आगे बढ़ता है। उसके पीछे सूबेदारनी, धाई

और दोनो वैद्य बाहर निकल जाते हैं। कर्मचारी सूबेदार के पास आता है। जरा दूर पत्रवाहक खड़ा है)

कर्मचारी : राजधानी से एक आदमी जरूरी चिट्ठी लेकर आया है। बुलाऊँ ?

सूबेदार : पूजा के पहले ?

कर्मचारी : तब फिर आप लोगों के लौटने पर—

सूबेदार : लौटने पर तो प्रीतिभोज है। उसके पहले तो संभव न होगा।

कर्मचारी : दक्षिण वाले महल का नक्शा लेकर दो स्थपतियों के आने की बात भी है—

सूबेदार : वे प्रीतिभोज मे आयेगे।

(सूबेदार चला जाता है। पत्रवाहक आगे आता है)

कर्मचारी : पूजा। पूजा के बाद प्रीतिभोज। प्रीतिभोज के पहले सूबेदार कोई खबर नही सुनना चाहते, खासकर खराब खबर। मै मानकर चल रहा हूँ कि तुम खराब खबर ही लाये हो। अभी फिलहाल, उधर रसोईघर मे जाकर आराम से खाना पीना करो।

पत्रवाहक : प्रीतिभोज के बाद ?

कर्मचारी : आराम का समय। उसके बाद दक्षिण के महल के संबध मे स्थपतियों से बातचीत। उसके बाद देखा जायेगा।

पत्रवाहक : पर मुझसे कहा गया है कि चिट्ठी बहुत जरूरी है—

कर्मचारी : दक्षिण का महल उससे भी ज्यादा जरूरी है।

पत्रवाहक : घोड़ा बिचारे का दौड़ते-दौड़ते दम निकल गया। अतिम पॉच कोस रास्ता घोड़ा दौड़ाते हुए ही आया हूँ।

कर्मचारी : बिलकुल ठीक किया। सरकारी काम इसी तरह करना चाहिए। घोडे को देखकर सीखो।

(कर्मचारी महल के भीतर जाता है। पत्रवाहक भी। दोनो सिपाही महल के दरवाजे की दोनों ओर अपनी-अपनी जगह पर आ जाते है। उम्मीदवार और भिखारियो का दल शोरगुल करता हुआ दूसरी ओर चला जाता है। दोनो सूत्रधार उन्हीं के दल में मिलकर साथ-साथ बाहर जाते हैं। दूसरे दो आदमी सूत्रधार बनकर आते हैं)

सूत्रधार-१ : शांत, शांत सुबह, शांत शहर।

सूत्रधार-२ : केवल मंदिर की कारनिस पर गुटरगू करते कबूतर।

सूतधार-१ : और महल के सिंहद्वार पर आता एक सिपाही—नाम सुमन।

(महल के भीतर से सुमन का प्रवेश। बाहर की ओर देखता है जैसे किसी की प्रतीक्षा में हो)

सूत्रधार-२ : रसोईघर की नौकरानी सोमा के साथ—

सूत्रधार-१-२ : रसभरी बातों मे तल्लीन—

(बाहर से सोमा का प्रवेश)

सुमन : यह क्या ? मंदिर नहीं गयी ? कैसी नास्तिक हो ?

सोमा : जाने के लिए तैयार ही थी। पर खाने में बत्तक कम पड़ गयी सो उसे खरीदने जाना पड़ा गॉव।

सुमन · गाँव ? ओ, हॉ हॉ, गॉव।

सोमा · गाँव नही तो और कहॉ ?

सुमन · गाँव के उस ओर झरने के किनारे तो नहीं गयी थी ?

सोमा : वहाँ क्यों जाती ?

सुमन : आज न सही, किसी और दिन ?

सोमा : वहाँ तो बराबर ही जाती हूँ, कपड़े धोने।

सुमन : हाँ हाँ, बराबर ही तो जाती हो, कपड़े धोने। और कुछ करने नही न ?

सोमा : कहना क्या चाहते हो ?

सुमन : झरना के उस ओर हुस्नहीना की झाड़ी है न ?

सोमा : हाँ, है। तो उससे क्या ?

सुमन : उसकी आड़ मे बैठकर बहुत कुछ देखा जा सकता है।

सोमा : "बहुत कुछ" माने ?

सुमन : कपड़े धोना. और.. और बहुत कुछ।

सोमा : "और बहुत कुछ" क्या ? कभी कभी गर्मी के दिनों मे पानी मे थोड़ा पैर डुबाकर बैठ जाती हूँ, और क्या ? (कपडा थोडा सा उठाकर दिखलाती है)

सुमन : थोड़ा नही, और ज्यादा।

सोमा : बिलकुल नही। बहुत हुआ तो इतना। (और थोडा उठाती है)

सुमन : थोड़ा और।

सोमा : छि. छि तुम्हे शर्म नही आती ? झाड़ी की आड़ मे छिपकर तुम लड़कियों का पानी मे पैर डुबाना देखते हो। लगता है यार-दोस्तो को भी साथ लेकर आया जाता है ?

(दौडकर महल के भीतर चली जाती है)

सुमन : (चोट खाकर) बिलकुल नही। यार दोस्तों को लेकर मै कभी—

(बोलते-बोलते वह भी भीतर जाता है। विपुल वर्मा का प्रवेश, साथ में कुछ सिपाही हैं। दरवाजे के दोनो सिपाही और साथ में आये सिपाहियों से फुसफुसाकर कुछ

(बातें करता है और चला जाता है। उसके साथ आये सिपाही भीतर जाते हैं)

सूत्रधार-१ : शांत, शांत सुबह, शांत शहर।

सूत्रधार-२ : पर इतनी सेना क्यों ? अफसर क्यो ?

सूत्रधार-१ : सूबेदार का महल शात है और वे लौट आये हैं उस महल मे।

सूत्रधार-२ : महल मे ? या मौत के कटघरे मे ?

(सूबेदार, सूबेदारनी, बच्चा लिये धाई, दोनो वैद्य लौटते हैं। कर्मचारी भीतर से आता है)

सूबेदारनी : दक्षिण के बरामदे से बगीचे के सिवा और कुछ न दिखलाई पड़े, हाँ। सारी गंदी बस्ती वहाँ से—

(बोलते-बोलते सब महल के भीतर चले जाते हैं। सूत्रधारो का प्रस्थान। दोनों स्थपतियों का प्रवेश)

स्थपति-१ : हम राजधानी से आये है।

स्थपति-२ : दक्षिण के महल का नक्शा लेकर।

कर्मचारी : आइए, आइए। अभी चलिए प्रीतिभोज में। सूबेदार जी शाम को नक्शा देखेंगे।

(महल में घुसना चाहता है, दरवाजे के सिपाही रास्ता रोक देते हैं)

क्या मतलब ? रास्ता छोड़ो।

(स्थपति हट जाते हैं)

स्थपति-१ : मतलब समझ रहे हो ? जमीदार लोग इसीलिए राजधानी मे जुटे थे क्या ?

स्थपति-२ : मतलब महाराजा के दिन पूरे हुए।

स्थपति-१ : उसके साथ ही महाराज के सब सूबेदारों के भी।

स्थपति-२ : अब यह जगह सुभीते की नही जान पड़ती।

स्थपति-१ : चलो, हम लोग दूसरी ओर खिसक चले।

कर्मचारी : रास्ता छोड़ोगे या नही, बोलो ?

(सिपाही चुप रहते है)

कर्मचारी : (डरकर पीछे हटते हुए) मतलब—मतलब तुम लोग विद्रोही हो ?

(कुछ लोग सूत्रधार बनकर आते हैं। कर्मचारी एक कोने मे छिप जाता है)

सूत्रधार-१ : क्षमता जितनी बढती है दृष्टि उतनी ही क्षीण होती जाती है।

सूत्रधार-२ : झुकी हुई पीठ पर आसन—

(सूत्रधार झुकते है)

सभी सूत्रधार : झुकी हुई पीठ....झुकी हुई पीठ....

सूत्रधार-१ : भाडे की मुट्ठियों के बल पर शासन....

सभी सूत्रधार : भाड़े की मुट्ठियाँ....भाड़े की मुट्ठियाँ।

(कुछ सिपाही एक दो एक दो . करते हुए महल के भीतर से आते है। दरवाजे के सिपाही भी उनका साथ देते हैं। वे सब महल के भीतर चले जाते हैं)

सूत्रधार-२ : दीर्घकाल की क्षमता पर अगाध विश्वास।

सूत्रधार-१ : लेकिन दीर्घकाल चिरकाल नही होता।

सूत्रधार-२ : परिवर्तन होता है, क्षमता बदलती है।

सूत्रधार-१-२ : जनता शायद ऐसा ही मानती चलती है।

सभी सूतधार : हाँ हाँ, जनता ऐसा ही मानती है, यही उसकी आशा है यही विश्वास है।

(बोलते-बोलते पहले दो सूत्रधारो को छोड़कर शेष सब चले जाते हैं। भीतर से सिपाही सूबेदार को बाँधकर लाते हैं। पैदल हत्यास्थल की ओर ले जा रहे होते हैं)

सूत्रधार-२ : यह चले जंडैल सूबेदार ।
सूत्रधार-१ : दक्षिण ओर वाले महल की रही नही दरकार ।
सूत्रधार-२ : दिख रहा सामने अब यम का दक्षिणमुखी द्वार ।
(सूबेदार को लिये सिपाही जाते हैं)
सूत्रधार-१ : शक्तिशाली का महल जब ढहता है—
सूत्रधार-२ : तो गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है ।
(परेशान शकित दास-दासी शोरगुल करते हुए आते हैं और महल के भीतर जाते है)
सूत्रधार-१ : शक्तिशाली के सौभाग्य मे वे हिस्सा नही पाते ।
सूत्रधार-२ : लेकिन उनके दुर्भाग्य वे बच नही पाते ।
(दास-दासी फिर तेजी से आते हैं । उनमें सोमा भी है)
दास-१ : बकसे कहाँ रखूँ ?
दासी : यहाँ, इस ओर ।
रसोईदारिन : पाँच दिनों का खाना डलिया मे लेना होगा ।
(कहकर रसोईदारिन तुरत चली जाती है)
सोमा : रानी माँ बेहोश हो गयी है । उन्हें उठाकर लाना होगा ।
दासी : बीच मे हम मरेंगे, सदा ऐसा ही होता आया है ।
दास-१ : शहर मे बहुत गोलमाल शुरू हो गया है ।
दास-२ : किसने कहा ? सूबेदार को जमीदार लोग न्योता देकर लिवा गये है ? यही पक्की खबर है ।
(बोलते-बोलते दोनो दासो का भीतर प्रस्थान । भीतर से तेजी से दोनों वैद्यो का प्रवेश)
वैद्य-१ : बहूरानी की देख-रेख करने की आज आपकी बारी है ।
वैद्य-२ : बिलकुल नही, आज आपकी बारी है ।
वैद्य-१ : बच्चे को कल किसने देखा था ? तुमने या मैने ?
वैद्य-२ : इसीलिए क्या तुम्हारी बात मानकर मै यहाँ पड़ा रहूँ

मरने को।

वैद्य-१ : तो तू चँकमा देकर भागेगा यों ?

वैद्य-२ : और नही तो क्या ? तू रह यही अपने पितरो का तर्पण करने को।

वैद्य-१ : साला !

वैद्य-२ : हरामी।

(झगडा और मारपीट करते दोनो भागते है। इस बीच सुमन आ चुका होता है, दास-दासी जा चुके होते है। सुमन सोमा के पास जाता है)

सुमन : अब क्या करोगी ?

सोमा : करूँगी क्या ? और कुछ न हुआ तो पहाड़ पर एक भाई रहते है, उन्ही के पास चली जाऊँगी।

सुमन : और मैं ? मुझे सूबेदारनी के साथ पहरेदार होकर जाना होगा।

सोमा : पर सुना, महल के पहरेदारो ने विद्रोह कर दिया है ?

सुमन : खबर सच्ची है।

सोमा : तो फिर सूबेदारनी के साथ खतरा नही है ?

सुमन : यह तो वही हुआ—छुरी मारने से छुरी को खतरा तो न होगा ?

सोमा : तुम छुरी तो नही हो, जीते जागते इंसान हो। इस औरत से तुम्हें क्या लेना-देना ?

सुमन (हँसकर) हाँ, ठीक ही कहती हो तुम, इस औरत से मुझे कुछ लेना-देना नही है। हुक्म हुआ है—

सोमा (गुस्से) यह तुम्हारी जिद है—

(सुमन तब भी हँसता रहा)

मै… मुझे अभी ही भीतर महल में जाना होगा।

(सोमा जाने के लिए मुडती है, सुमन रोकता है)

सुमन : जब दोनों को ही जल्दी है तो झगड़ा बेकार है। अच्छी तरह झगड़ने को भी समय चाहिए। उसके बदले—माँ-बाप जिन्दा हैं या नही जान सकता हूँ ?

सोमा : नही है, बस एक भाई है।

सुमन : दूसरा सवाल—स्वास्थ्य मामूली तौर पर ठीक-ठाक है न ?

सोमा : दाहिने कंधे मे कभी-कभी दर्द होता है, उसके अलावा सब ठीक है। काम की कभी किसी ने शिकायत नही की ?

सुमन : सो तो मालूम है। तीसरा सवाल—मन मे धीरज है न ? सर्दियो मे आग न मिलने से छटपटी तो नही मच जाती ?

सोमा : नही ! पर कोई बिना मतलब लड़ाई पर जाये और वहाँ की कोई खोज-खबर न मिले तो यह अच्छा नही लगेगा।

सुमन : खोज-खबर मिलेगी, जरूर मिलेगी। आखिरी सवाल है माने..

सोमा : मुझे भीतर भागना होगा। मेरा जवाब है—हाँ।

सुमन : (लज्जित होकर) कहावत है कि जहाँ किया हड़बड़, काम हुआ गडबड़। और यह भी कहा जाता है कि बड़ा चले हाथ भर, छोटा चले गज भर। हाँ, तो मेरी बात भी सुन ली जाये। मेरा गाँव है—

सोमा : सोनाई ग्राम।

सुमन : (हँसकर) मेरे बारे मे खोज-पूछ कर रखी है, क्यों ? फिर भी मैं खुद बतला दूँ मेरी उम्र पचीस। परिवार

मे कोई नही है। महीना अभी है तीस टंका, हवलदार होनेँ पर मिलेगा पचास टंका। मै अभी .. क्या—

सोमा : कहा तो—हाँ।

सुमन : यह यह ताबीज माँ ने दी थी। गले मे पहनने से—

सोमा : दो।

सुमन : मैं सूबेदारनी के साथ दीघड़िया जा रहा हूँ। वहाँ पर सूबेदार की कुछ अपनी फौज है। लड़ाई खत्म होने पर लौटूँगा। दो महीना, या बहुत हुआ तो तीन महीना धीरज रहेगा तो ?

सोमा : रहेगा। मै इंतजार करूँगी जितना दिन भी लगे।

सुमन : मै चलूँ, गाड़ी जोतनी है।

सोमा : मै भी चलूँ, भीतर काम है।

(तनिक देर एकटक देखकर सुमन एक ओर जाता है। सोमा भीतर जाती है। कर्मचारी का प्रवेश)

कर्मचारी : खड़ा खडा देख क्या रहा है गधे ? जल्दी से गाड़ी जोत।

(सुमन का जल्दी से प्रस्थान। सूबेदारनी का भीतर से जल्दी से प्रवेश, साथ मे दास-दासी हैं)

सूबेदारनी : मैं पागल हो जाऊँगी, तुम लोगों के कारण। ये बकसे गाडी पर रखो जल्दी। भानु कहाँ है, ले आओ। सूबेदार की कुछ खबर मिली ?

कर्मचारी : नही। जल्दी कीजिए, देरी करना ठीक नही। इतने बकसे गाड़ी मे नही अँट सकते। जो बहुत जरूरी हैं, उन्हें ही लीजिए।

सूबेदारनी : उन्हे ही, बस ? हे भगवान, हुई न मुसीबत। उतारो, उतारो, नीचे उतारो जल्दी। यह हरी जरदोज़ो और

वह लाल बनारसी—जमुना कहाँ गयी ? आ हा हा.... फाड़ मत डाल ।

दासी : नही नही, फाड़ कहाँ रही हूँ ?

सूबेदारनी : फाड़ कहाँ रही हूँ ! कहाँ इसीलिए उलटकर जवाब दे रही है नही तो जरूर फाड़ डालती । जमुना कहाँ गयी—अरे, भानु को ठीक से पकड़ ।

कर्मचारी : आपके हाथ जोड़ता हूँ, जल्दी कीजिए । शहर मे लड़ाई शुरू हो गयी है ।

सूबेदारनी : हे भगवान । वे लोग हमे तो कुछ नही करेंगे न ? क्यों करेंगे भला ? ए, भानु क्या सो गया ?

धात्री : हाँ रानी माँ ।

सूबेदारनी : तब उसे नीचे रख दे और दौड़कर एक काम कर । सोने के कमरे मे मेरी लाल मखमली जूती—देखो, देखो, किस तरह कपड़े भर दिये है ? तनिक खयाल नही ?

(इस बीच धात्री बच्चे को नीचे लिटाकर भीतर जाती है)

आवे जमुना, आज उसका मुँह तोड दूँगी । ये नौकर-चाकर ऐसे हो गये है कि बस बैठे-बैठे ठूँसेंगे और काम के समय केवल—

कर्मचारी : जल्दी न निकलने से—

सूबेदारनी : गुलाबी बनारसी नही दिख रही है । नौ सौ टंका की साड़ी—

कर्मचारी : अब गाड़ी से काम नही चलेगा । लगता है घोड़ों पर ही जाना होगा—

सूबेदारनी : ऐं ? चल रही हूँ बाबा, चल रही हूँ । अरे, कपड़ा ले आ जल्दी । भानु कहां है, उसे ला । अरे, बाबा, इन्हें गाड़ी

पर चढ़ायेगा कि नहीं ? मुँह बाये खड़ा है—

(बाहर गोलमाल । "मारो-मारो" शब्द)

हे भगवान, यह क्या हुआ ?

(कर्मचारी ठेलकर सूबेदारनी को ले जाता है । धात्री का प्रवेश)

धात्री : यह देखो, बच्चे को छोड़ गये सब । ये लोग आदमी हैं या जानवर ?

(बच्चे को उठाती है । जरा इधर-उधर करके सोमा के पास जाती है)

इसे पकड़ तो जरा ।

(सोमा के हाथ में बच्चे को पकड़ाकर भाग जाती है । रसोईदारिन का प्रवेश)

रसोईदारिन : यह क्या, चले गये ? खाने-पीने का तो सब पड़ा ही रह गया ।

दास-३ : बाप रे बाप, कितने कपड़े ?

दास-१ : यहाँ रहने से ही मरेंगे । जो ले सके, ले देकर चम्पत हो ।

(एक बूढ़ी नौकरानी का प्रवेश)

बूढ़ी : ए बेटा, हम लोगो का क्या होगा ?

सोमा : सूबेदारजी को वे लोग क्या कर रहे हैं ?

दास-१ : कतल ।

बूढ़ी : ऐ ? क्या कह रहे हो ? अरे बाबा रे बाबा, हमारा क्या होगा ! सबेरे एकदम अच्छे-भले थे—बेटा, हम लोगों का क्या होगा—

दास-२ : हल्ला मत करो मौसी, तुम्हे कुछ न होगा—

रसोईदारिन : बेटा, मौसी का मन रानी माँ के मन से ज्यादा कोमल है । उन लोगों के हिस्से का रोना भी हमे ही रोना है ।

दास-३ : ले, चल, चल।

दास-१ : देखो, देखो, पूरब की ओर आग लगी है।

रसोईदारिन : यह क्या, तू बच्चे को लिए क्या कर रही है?

सोमा : इसे छोड गये है वे लोग।

दास-१ : नीचे रख दे। तेरे हाथ मे उसे देखा तो तेरी खैर न होगी।

दास-३ : हॉ, पूरा बंश नेस्तनाबूद किये बिना वे मानेंगे नही। ले चल अब।

रसोईदारिन : सुना नही ? उसे नीचे रख दे।

सोमा : धाई-मॉ तनिक पकड़ने के लिए कहकर गयी हैं—

दास-१ : धाई-मॉ अब तक शहर के बाहर पहुँच गयी होगी। तू भी ऐसी बुद्धू है—

रसोईदारिन : देख सोमा, तेरा मन नरम है पर बुद्धि कच्ची। चल, मेरे आदमी की बैलगाड़ी है, उस पर तुझे भी ले चलूंगी। चल, उसे नीचे रख।

(सोमा शिशु को नीचे रखती है। बाहर कोलाहल)

दास-१ : अरे बाप रे बाप, सिपाही आ रहे हैं, सब लोग भागो।

(सब भागते हैं। बच्चे के कारण सोमा दुविधा में पड़ जाती है। जमींदार विपुल वर्मा का प्रवेश। साथ में सिपाही सूबेदार की लाश लिये हैं। सोमा छिप जाती है। बच्चा जमीन पर पडा है)

विपुल : लाश को उस ओर टांग दो, ठीक बीच मे। वहाँ नही जरा और बाये, और। हॉ ठीक है अब।

(लाश अर्थात् सूबेदार का काड़ा टंग जाता है)

सूबेदार की बीबी को लेकर भाग गयी। इसी का अफसोस है। वंश का अंत नही हुआ, वंशधर बच ही

गया। पर मै उसे छोड़ूँगा नही, खोजकर निकलूँगा ही चाहे जैसे हो। लो, चलो—

(सब चले जाते हैं। बाहर आकर सोमा फिर से बच्चे को गोद में लेती है। दुविधा में है। फिर लाश पर नजर जाती है)

सोमा : अरे बाप रे......यह क्या ?

(जल्दी से बच्चे को नीचे रखकर भागती है। बाहर जाते-जाते दरवाजे पर रुक जाती है। सूत्रधार मानों उसका रास्ता रोक देते हैं। सूत्रधार चारो ओर फैल जाते है। एक आदमी बोलता है, बाकी सब वाक्य के अतिम अश की पुनरावृत्ति करते हैं, प्रतिध्वनि की तरह। सूत्रधार के कहे अनुसार सोमा काम करती है)

सूत्रधार · एक पैर बाहर, एक भीतर दरवाजे के
एक पैर बाहर, एक भीतर दरवाजे के
बच्चा पुकार। रोता नही गाता नही
गुपचुप पुकार रहा। कह रहा
मुझको बचाओ, कोई मुझको बचा लो।
रोकर नही कह रहा, कह रहा गुपचुप, बड़े समझदारों सा।
कह रहा—संकट मे पड़े की आवाज जो सुनता नही
कैसे सुन सकता वह स्नेह की पुकार, बोलो।
नही सुन पायेगा चिड़ियों की चीची वह सुबह-सुबह
कभी भी नही सुन पायेगा झरने की मधुर हँसी, खिलखिलखिल वह कभी भी बात सुनी सोमा ने, लौट आयी, शिशु के पास बैठी वह जरा देर बैठेगी, ऐसा सोच बैठी वह,

ऐसा सोच बैठी वह ।
जब तक नही लौटती है माँ उसकी
या फिर उसकी धाई माँ ।
या फिर कोई और, हाँ, कोई भी
बस उतनी देर ऐसा सोच बैठी वह
चारों ओर गोलमाल, संकट है
शहर मे छिड़ी है लड़ाई, खून आग चारो ओर।
जरा देर बैठेगी ।
कितनी देर ?
लोभ बहुत अधिक होता भले होने का ।
कितनी देर ?
जरा देर । बहुत देर । सारी शाम । सारी रात ।
बहुत देर ।
बहुत बहुत देर देखा किया उस सोये शात चेहरे को
छोटे-छोटे मुट्ठी बँधे छोटे दो हाथो को
सुनी धीमी साँस । बहुत देर तक
सुबह हुई । जीत हुई लोभ की, आकर्षण की ।
छोड़ लम्बी साँस, ले सोया शिशु गोद में
भागी दबे पाँवो जैसे चोर हो
गोद मे छिपाये हो चोरी का माल

(सोमा जाती है)

चली गयी शहर से दूर, बहुत-बहुत दूर
उत्तर के पहाड़ों मे ।

(सोमा दूसरी ओर से आती है । गोद में शिशु है । दो सूत्रधारो का प्रवेश)

सूत्रधार-१ : भागकर जायेगा कहाँ यह शिशु ।

सूत्रधार-२ : चारों ओर जाल बिछा ।
सूत्रधार-१ : घेरे शिकारी कुत्ते ।
सूत्रधार-२ : दूध भी तो चाहिए ।
सूत्रधार-१ : दूध तो किसान से खरीद लेगी सोमा अभी ।

(दोनो सूत्रधार दरवाजा बनकर खडे होते है । एक बुड्ढा किसान जैसे दरवाजा ठेलकर भीतर जाता है । सोमा उसको देखती है)

सोमा : यही पर हम लोग जरा देर बैठेंगे । घास पर चुपचाप सोमा जायेगी दूध लाने ।

(बच्चे को नीचे लिटाकर सोमा जाकर दरवाजे पर धक्का देती है)

बाबा.. ओ बाबा

(दरवाजा खोलकर बूढे किसान का प्रवेश)

एक कटोरा दूध मिलेगा ? और दो बासी रोटी, हो तो ?

किसान : दूध ? दूध नही है । सिपाही सब उठा ले गये । उनसे जाकर दूध माँगो।
सोमा : थोड़ा सा, एक कटोरा ।
किसान : उसके बाद—"भगवान तुम्हारा भला करे बाबा" और बस ?
सोमा : "भगवान भला करे" कौन कह रहा है ? पूरा पैसा दूँगी ।

(बुड्ढा दूध लाता है)

दाम ?

किसान : तीन आना । दूध का बहुत दाम है आजकल ।
सोमा : तीन आना ? इस बूँद भर दूध का ?

(बुड्ढा दरवाजा बन्द कर देता है)

सुना रे भानु ? तीन आना ? कहाँ से दूँगी ।

(बच्चे को चुप कराने की कोशिश करती है फिर नीचे लिटाकर दरवाजे पर जाती है)

ए बाबा, सुनो । दरवाजा खोलो । पूरा दाम ही लो बाबा ।

(दबे गले से) सिर पर बज्जर पड़े बुड्ढे के ।

(बुड्ढा दरवाजा खोलता है)

उतने दूध का दाम तो दो पैसा होगा, चलो तुम एक आना ले लो ।

किसान : दो आना ।

सोमा : दो आना ? रुको, रुको, दरवाजा मत बंद करो । क्या करूँ बच्चे को दूध तो पिलाना होगा । दो ।

(पैसा देकर दूध लेती है)

दूध अच्छा है न ? अभी बहुत दूर जाना है । अच्छा लूटनेवाला धंधा पकड़ा है बाबा ।

किसान : ठीक है, मैं तुम्हें लूट रहा हूँ तो जाओ बदले मे तुम सिपाहियों को लूटो, दूध मुफ्त में मिल जायेगा ।

सोमा : यह सब ठट्टा अच्छा नही । क्या हुआ, रोटी नही दोगे ?

(किसान रोटी लाकर देता है, फिर दरवाजा बन्द कर देता है)

ले बाबा, पी । एक हफ्ते की मेहनत का पैसा गया । भानु रे . .तेरा क्या करूँ रे ?

(सूत्रधार दरवाजा छोडकर आते हैं । बुड्ढा किसान चला जाता है । सोमा बच्चे को लेकर चल पडती है)

दोनों सूत्रधार : उत्तर की ओर । उत्तर की ओर पहाड़ के रास्ते चल

पड़ी सोमा। और उत्तर, और उत्तर.. ....

सूत्रधार-१ : पीछे ज़मीदार के सिपाही।

सूत्रधार-२ : शिकारी कुत्ते।

सूत्रधार-१ : कसाइयो का दल।

(एक हवलदार आता है, पीछे दो सिपाही)

सूत्रधार-२ : दिन नही, रात नही—

सूत्रधार-१ : चैन नही पल भर हत्यारो को

सूत्रधार-२ : रात मे नीद नही—

(सूत्रधारो का प्रस्थान। सोमा एक ओर चलने की भगिमा में खडी होती है। हवलदार और सिपाही चलते हैं)

हवलदार : कुछ नही होगा। तुम लोगो के किये कुछ न पार पड़ेगा। काम मे मन कहाँ है तुम लोगों का ? कहाँ है मन ? उस दिन जब मै उस किसान की बहू के साथ था—ठीक है, तुम लोगों ने किसान को पकड़ रखा था, मानता हूँ। पर सब तो हुकुम पर किया ? काम मे सचमुच का आनन्द मिला तुम लोगों को ? करना पड़ता है, करते हो। ऐ, लँगड़ा क्यों रहा है ? लॅगड़ाना मना है। घोड़े बेच दिये है इसलिए जानबूझकर दिखा-दिखाकर लँगड़ा रहा है, क्यो ? साले, घोड़ा बेचूँ न तो क्या करूँ ? इतना दाम और कहाँ मिलता ? चलो, कोई गाना शुरू करो सालो।

सब सिपाही : चलो जग को जंग छिड़ गया, आया सबको परवाना।
चारो ओर मचा कोलाहल शुरू हुआ रोना गाना।
रोओ मत माँ, मत बिखराओ प्रिये आज यो केश।
जंग खतम होते ही भागा आऊँगा मैं देश।

(सिपाहियो का गाने लायक गला नही है पर यही गीत बाहर से नारी कठ में आता है और धीरे-धीरे छा जाता है। तब यह केवल तालबद्ध पैर रखने का आधार भर नही रह जाता, वरन् सार्थक हो उठता है।)

हवलदार : ए, दम नही है ? जोर से गा।

सब सिपाही : घोड़ा करता हिनहिन हिनहिन तलवारो के डर से
धरती रगी, घास पौधे भी लाल खून के रंग से
रक्त मांस-मज्जा बिखरे है यहाँ वहाँ सब ओर
मांस नोचता गिद्ध, हाड़ चूसे कुत्ता उस ओर।

हवलदार : दिल ही न रहा तो फिर सिपाही क्या करे ? सच्चा सिपाही दिल देकर लड़ाई करता है। पेट मे बल्लम घुसा हो तब भी आँख उलटने से पहले एक बार देख लेता है—ऊपरवाला खुश होकर गरदन हिला रहा है न ? बस, यही उसका सबसे बड़ा इनाम होता है। तुम लोगों को देखकर तो कोई कभी गरदन हिलायेगा नही। आँखे उलटोगे ठीक ही पर गरदन कोई नही हिलायेगा।

(चलते-चलते सब बाहर निकल जाते है। पीछे से आनेवाला गाना भी धीरे-धीरे बन्द हो जाता है। अब सोमा चल रही है। दो सूत्रधारों का प्रवेश)

दोनों सूत्रधार : चलते चलते चलते चलते
लुकते छिपते चलते चलते
सोमा पहुँची नदी किनारे
कुरला तीरे।
बोझ बहुत था
बच्चा हो असहाय तो उसका वजन बहुत होता है।

और नही, सोमा अब और नही सक रही ।
गेहूँ का खेत
कुहरा ढकी सुबह
सर्दी की तकलीफ, सब तो है।
गाँव को ढेंकी की आवाज
बैलगाड़ी के पहियों की तेज चीख
भागने वाले के मन मे बस भय पैदा करते है ।
बहुत बोझ । सोमा और नही सकती ।

(सूत्रधार झोपडी की दीवाल और छप्पर बनते हैं । किसान की बहू पानी लाती है । किसान भीतर झोपड़ी में है)

सोमा : और नही, अब और नही । भानु आ, अब हम दोनों यही से अलग हो जाये । शहर से बहुत दूर आ गये हैं हम, इतनी दूर तक वे लोग तुझे खोजते हुए नही आयेंगे । तू उतना कीमती नही है । यह किसान की औरत है न, दिखने मे अच्छी ही लगती है। और देख दूध की महक आ रही है न ?

(बच्चे को रखने जाती है पर लौट आती है)

गोदी मे लेटकर तूने पेट पर बहुत लात मारी है, मैं भूल जाऊँगी इस बात को । तुझे अच्छी तरह खिलाया पिलाया नही, इस बात को तू भी भूल जाना । तुझे—तेरी नाक कितनी छोटी है रे । मैं—(कलेजे से लगाकर रखती है) नही, नही अब और नही । सुमन लौटेगा, मुझे नही पायेगा तो क्या होगा, बोल ? अच्छा होगा ? नही न ? तब बोल !

(झोपडी के दरवाजे पर लिटा देती है । जाते-जाते

रुकती है। फिर एक कोने में छिपकर आड़ से देखने लगती है। झोपडी मे जाते समय किसान की औरत की नज़र बच्चे पर पड़ती है)

किसान की बहू : अरे, यह कौन है ? अरे, सुनते हो ? (बच्चे को गोद में उठा लेती है)

किसान : हुआ क्या ? चना-चबेना देगी या नही ?

(बाहर आता है)

किसान की बहू : यह देखो। इसकी माँ कहाँ गयी? माँ नही है क्या ? देखो-देखो, कुर्त्ता देखो, रेशमी है। किसी बड़े घर का बच्चा लगता है। आ हा हा, ऐसे कौन फेंक गया ? बाबा कैसा समय आ गया है।

किसान : कोई फेंक गया है। अपनी गृहस्थी मे एक भी और पेट के लिए ठिकाना नही है। चलो, इसे मंदिर मे पुजारी जी के पास पहुँचा दे।

किसान की बहू : पुजारीजी क्या करेंगे इसका ? इसे जरूरत है माँ की। देखो, जाग गया है। इसे यही रख ले न ?

किसान : (जोर से विरोध करते हुए) नही।

किसान की बहू : देखो, देखो, हँस रहा है।

किसान : हँसने दो।

किसान की बहू : देखो, हमारे सिर पर तो फिर भी एक छत है। इस बिचारे का क्या है ? ऐसे मत करो तुम—

(झोपड़ी के भीतर जाती है। किसान लाचार हो जाता है। सोमा आड से बाहर आती है। झोपडी बने सूत्रधार उसके पास बढ आते हैं। किसान और किसान की बहू बच्चे को लेकर चले जाते हैं। सोमा खुश होती है)

दोनों सूत्रधार : इतनी खुशी किस बात की ?

बच्चे को माँ मिली, इसलिए ?
घर मिला, इसलिए ?
सिर पर से बोझ उतरा, इसलिए ?
(सोमा अब गभीर है)
चेहरे पर उदासी क्यो ?
फिर अकेली, इसलिए ?
फिर हलकी, इसलिए ?
(सोमा दृढ कदमो से उलटे लौटती है। वही हवलदार और दो सिपाही आते है। सोमा उनके एकदम सामने पडती है। दोनो सूत्रधार चले जाते है)

हवलदार : अरे रे रे...इतनी हड़बड़ी में कहाँ जा रही हो ? दुश्मनो के साथ कुछ लगाव-वगाव हो गया है क्या ? महाराज के लोगों के साथ ? कहाँ है वे ? किस पहाड़ पर ? किस जगल मे ? किन झाड़ियों मे ? अरे, डरती क्यो हो ? कहाँ जा रही हो, बतलाओ तो।

सोमा : रूपनगर।

हवलदार : रूपनगर ? वहाँ कौन है ?

सोमा : है नही, आयेगा।

हवलदार : कौन ?

सोमा : मेरा आदमी।

हवलदार : तुम्हारा आदमी ?

सोमा : लड़ाई पर गया है।

हवलदार : लड़ाई पर ?

सोमा : नाम सुमन।

हवलदार : हाँ हाँ, सुमन। मै जानता हूँ, पहचानता हूँ उसे। मुझसे कह गया है तुम्हारी देखभाल करने को।

तुमसे मुझे केवल एक बच्चा चाहिए।

(सोमा चौंककर रुक जाती है)

हा ! हा ! हा ! देखा, मतलब समझ गयी।
समझदार है। अच्छा, मजाक छोड़ो। हम लोग जिस बच्चे की तलाश में हैं वह रूपनगर का बच्चा है। बड़े घर का बच्चा है, रेशमी कुर्त्ता पहने है। उसे देखा है ? उसके बारे मे कुछ जानती हो ?

सोमा : नही मैने नही देखा . मुझे कुछ नही पता ...मैं.......

(अचानक डर के मारे सोमा का बुरा हाल हो जाता है। वह पागलो की तरह भागती है, जिधर से आयी थी उसी ओर)

हवलदार : ऐ .. पकड़ो।

(पीछे जाता है। दो सूत्रधारो का प्रवेश। सोमा, हवलदार और सिपाही दौडने की मुद्रा में स्थिर हो जाते है)

सूत्रधार-१ : भागो भागो खूनी आ गये है।

सूत्रधार-२ : असहाय बच्चा असहाय तुम। भागो, भागो।

सूत्रधार-१ : इतने खून-खराबे के बीच ऐसा मोह क्यों ?

सूत्रधार-२ : कहाँ से आता है ?

(दोनो फिर किसान की झोपडी बन जाते है। किसान की बहू ने बच्चे को भीतर लाकर सुला रखा है। सोमा दौडती हुई भीतर आती है)

सोमा : जल्दी ! उसे छिपा दो। सिपाही आ रहे हैं।

किसान की बहू : तुम ? तुम कौन हो ?

सोमा : मैं ही उसे रख गयी थी। वह मेरा बच्चा नही है, बड़े घर का बच्चा है। उसे छिपा दो, सिपाही आ रहे हैं।

किसान की बहू : कौन सिपाही आ रहे है ? किस बडे घर का बच्चा है ?

सोमा : अभी समय नही है, बाद मे बतलाऊँगी। रेशमी कुर्त्ता उतार दो।

किसान की बहू : क्यों ? तुमने कहा और मैं उतार दूँ ? अच्छा यह किसका घर है, तुम्हारा या मेरा ?

सोमा : ओह, जल्दी।

किसान की बहू : बच्चे को ऐसे क्यो फेंक गई ? इसमे पाप नही लगता ?

सोमा : लो, आ गये। ओह, मै क्यों भागी, अब क्या करूँ ?

किसान की बहू : हे राम ! सिपाही !

सोमा : उसे खोज रहे है।

किसान की बहू : भीतर घुसे तो ?

सोमा : कहना तुम्हारा बच्चा है।

किसान की बहू : विश्वास न किया तो ?

सोमा : खूब जोर देकर कहना।

किसान की बहू : घर में आग लगा दे तो ?

सोमा : इतना डरो मत। नहीं तो वे पकड़ लेंगे। सीधे खड़ी हो।

(मगर किसान की बहू में खडे रहने की हिम्मत नही है)

तुम्हें बाल-बच्चा नही है ?

किसान की बहू : एक बेटा है। लड़ाई पर गया है।

सोमा : इसका मतलब वह भी सिपाही है ? वह यदि किसी बच्चे को मारने जाये तो क्या तुम चुप रहोगी ? कहोगी नहीं कि—खबरदार बेटा, तूने क्या यही शिक्षा पायी है ? कहोगी नही कि—जा, हाथ-मुँह धोकर आ, खाने

बैठ ? कहोगी नही ?

(किसान की बहू खड़ी होती है)

किसान की बहू : कहूँगी क्यों नही ? कान पकड़कर—

सोमा : तो फिर कहोगी न कि यह तुम्हारा बच्चा है।

किसान की बहू : हाँ, कहूँगी। जरूर कहूँगी।

सोमा : लो पहुँच गये।

(हवलदार और दो सिपाही आगे आ जाते हैं। हवलदार झोपड़ी में घुसता है)

हवलदार : यह रही। कहा नही था तुम लोगो से ? मुझे गध मिलती है। तुम इस तरह भागी क्यो, ऐं ? जरूर कोई गोलमाल है। सच-सच बताओ तो बिटिया रानी।

सोमा : मै. चूल्हे पर दूध चढ़ा छोड़ गई थी। अचानक ध्यान आया सो—

हवलदार : चूल्हे पर दूध। या खाट पर कोई भूत। (सिपाहियो से) अरे हँसो, सालो, मजाक भी नही समझते। (किसान की बहू से) ए बुढ़िया, तू यहाँ क्या कर रही है ? जा, बाहर जाकर मुर्गी को दाना डाल।

(सिपाहियो को देखकर किसान की बहू अब तक थरथर काँप रही थी)

किसान की बहू : मुझे कुछ नही पता भैया। घर मे आग मत लगा देना भैया।

हवलदार : क्या कह रही है, सुनो।

किसान की बहू : मै कुछ नही जानती बाबा। वही दरवाजे पर सुला गई थी।

हवलदार : क्या ?

(सोमा को धक्का देकर हटाता है। बच्चे पर नजर पडती है)

अरे वाह ! अब तो मुझे हजार टंका बख्शीश की गंध आ रही है। अरे उल्लू के पट्ठो, इस बुढ़िया को बाहर ले जाकर पकड़कर रखो, मै तब तक इस सुन्दरी से जरा जिरह कर लूँ।

(सिपाही किसान की बहू को लेकर बाहर जाते हैं)

हाँ तो हम लोग जिस बच्चे को खोज रहे है, वह तुम्हारे पास है ?

सोमा : बिल्कुल नही। यह मेरा बच्चा है। तुम लोग जिसे खोज रहे हो, यह वह नही है।

(बच्चे को लेने के लिए बढती है। हवलदार उसे एक धक्के में गिरा देता है)

हवलदार : वाह, रेशमी कुर्त्ता फटा है, पर है रेशमी।

(सोमा लाचारी में इधर-उधर कोई औजार खोजती है)

सोमा : मेरा बच्चा, मेरा बच्चा है।

हवलदार : वाह ! हजार टंका।

(सोमा को एक लाठी मिल जाती है। पूरे जोर के साथ हवलदार के सिर पर मारती है। वह गिर जाता है। बच्चे को उठाकर सोमा भाग निकलती है। सूत्रधारों का प्रवेश। जो झोपडी बने थे वे भी उनके साथ मिल जाते है)

दौड़ दौड़ दौड़। दौड़ दौड़ दौड़।

सिपाही पीछे। हवलदार पीछे, शिकारी कुत्ते पीछे।

दौड़ दौड़ दौड़।

पहाड़ी नदी पर का टूटा पुल

सौ फुट नीचे बहती किस्ता नदी, हू हू करती।
टूटी रस्सी
उसे बाँस से खीचकर बाँधने मे लगे
दो व्यापारी पशम के।

(इस बीच हवलदार उठकर सिपाहियों को साथ ले सोमा के पीछे जा चुका है। सूत्रधार लोग लेटकर, बैठकर, खड़े होकर टूटा पुल बनते हैं। दोनों व्यापारी एक ओर। काल्पनिक बाँस से मानो रस्सी पकड़ने की चेष्टा कर रहे हैं। सोमा दौड़ती हुई आती है और टूटे पुल पर जाने लगती है। व्यापारी उसे रोकते हैं)

व्यापारी-१ : आ हा हा, कहाँ जा रही हो, देखती नही, पुल टूटा है?

व्यापारी-२ : हम बाँस से रस्सी पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं। देखती नही? रस्सी पकड़ मे आ जाय तब तक—

सोमा : मेरे भाई का घर उधर है, मुझे जाना ही है उस ओर।

व्यापारी-१ : देख रहे हो "कैसे बह रही है—जाना ही है उस ओर" अरे भाई, हमे भी जाना ही है उस ओर। ऊनी कम्बल खरीदना ही है उस उधर के गाँव में विधवा को "कम्बल बेचना ही है" उस गाँव मे क्योंकि अभी कुछ दिन पहले "मरना ही पड़ा" उसके आदमी को। पर क्या, इसीलिए हम जा पा रहे है उस ओर? कम्बल बेच पा रही है वह विधवा।

(इस बीच सोमा ने बच्चे को पीठ पर बाँध लिया है)

व्यापारी-२ : कोई आ रहा है।

सोमा : (जल्दी से) पूरा नही टूटा है। कोशिश करके देखती हूँ।

(पुल पर चढने लगती है)

दोनों व्यापारी : देखो... देखो....देखो तमाशा....

सोमा : चुप। चिल्लाओ मत।

व्यापारी : क्यों, चिल्लाएँ क्यो नही ?

व्यापारी-१ : कोई तुम्हारा पीछा कर रहा है क्या ?

सोमा : ठीक है, तुम्हे सब खोलकर ही बताती हूँ। सिपाही मेरा पीछा कर रहे है, मुझे पकड़ने आ रहे हैं। मैंने उनके हवलदार के सिर पर डंडा मारा है।

व्यापारी-१ : सिपाही है ? अरे सब चीज सामान हटाओ जल्दी ?

सोमा : हटो, मुझे पार होने दो।

व्यापारी-१ : माथा खराब है ? नदी एक सौ फुट नीचे हैं।

सोमा : मै कह रही हूँ न, रास्ता दो।

(धक्का देकर हटाती है और पुल पर चढ़ती है)

व्यापारी-२ : बच्चे को छोड़ जाओ नही तो दोनो की जान जाएगी।

सोमा : बचेंगे तो दोनो बचेंगे नही तो दोनो जाएँगे। बाँस फेंक दो नही तो डोरी उनकी पकड़ मे आ जायेगी ?

दोनों व्यापारी : हे भगवान्.. हे भगवान्... हे भगवान्. ..

(गिरते-पडते सोमा पुल पार हो जाती है)

व्यापारी-१ : पार हो गयी।

व्यापारी-२ : पर काम बड़ा खतरनाक था।

(हवलदार और सिपाहियो का प्रवेश)

हवलदार : ए, तुम लोगो ने एक लड़की को देखा है ? गोदी में बच्चा लिये ?

व्यापारी-१ : हाँ, उस पार गयी। पर पुल एकदम टूट गया है।

(उसके इशारे पर दूसरा व्यापारी बाँस चुपचाप नदी में फेंक देता है)

हवलदार : साला, हजार टंका ।

(हवलदार, सिपाही और व्यापारी चले जाते हैं। सूत्रधार जो नदी का पुल बने थे, अब झरना में रूपांतरित हो जाते हैं। सोमा चली जा रही है)

सब सूत्रधार : दौड़ दौड़ दौड़। दौड़ दौड़ दौड़।
गेहूँ का खेत पार करते
बाँस का झुरमुट पार करते
पहाड़ी रास्ते पर चलते।
दौड़ दौड़ दौड़।
पथरीला रास्ता।
रास्ते के हर पत्थर पर पैरो का खून
शीत से ठिठुरते हाथ, नीले होठ
अंत मे बरफ से ठंडे पानी के झरने के किनारे
सोमा माँ बनी।

(चलते चलते थककर चूर हुई सोमा झरना के किनारे पहुँचती है)

सोमा : तुझे और कोई नही लेगा। इसलिए तुझे मै ही लेती हूँ।
तुझे और कोई नही लेगा। तू मुझे ही ले।
पैर अब और नही उठ रहे। रास्ता बड़ा लम्बा है।
दूध बड़ा महँगा है।
फिर भी मै तुझे छोड़ूँगी नही, किसी और को दूँगी नही।
तेरा रेशमी कुर्त्ता फेंक दूँगी
फटा झबला पहना दूँगी।
तू अब मेरा बेटा है। मेरा बेटा। और मैं तेरी माँ....

तेरी माँ।

(सोमा झरना पार करके चली जाती है। सूत्रधार अब पहाड़ी रास्ता, पत्थर, पेड, ऊँचा-नीचा रास्ता बनते हैं। सूत्रधारो के गले से गुनगुनाहट के रूप में एक स्वर सुनाई पड़ता है, उनकी बात के अंत में प्रतिध्वनि का सा आभास होता है। सोमा आती है, पहाड़ी रास्ता एक एक करके पार करती चलती है रेशमी कुर्ते के बदले अब एक फटा कुर्ता शिशु के रूप में हाथ में है)

सूत्रधार : सात दिन। चढ़ाई, उतराई, फिर चढ़ाई।
पहाड़, झरना, बरफ, देवदार के पेड़।
सात दिन। सात ठंडी रात। सोमा सोच रही है।

(सूत्रधार खेत खलिहान में रूपातरित होते हैं। सोमा अपने भाई-भाभी के बारे में सोच रही है। वे उसका बड़े प्रेम से स्वागत करेंगे, उसे सब कुछ दिखलायेंगे)

सोमा सोच रही है—भैया के यहाँ पहुँचूंगी तो भैया अवाक् रह जायेंगे। कहेगे—अरे सोमा तू ? मै सदा सोचा करता था कि तू कब आयेगी। कहेंगे—और यह तेरी भाभी। और यह हमारे खेत-खलिहान, इसके बापू ने हमे दिये हैं। यह बत्तक का घर, यह मुर्गी का। और यह भेड़ का बाड़ा—तीस भेड़ हैं। यह गोशाला—छः गाय है। आ, बैठ खा-पी। गरम रोटी, बत्तक का मांस और दूध। अंडे की तरकारी रसेदार—

सोमा सोचती जा रही है, सोचती ही चली जा रही है।

(सोमा अपने भाई के घर के पास पहुँचती है और थक-

कर सुन्न होकर पड जाती है। एक नौकरानी उसे उठा-कर भीतर ले जाती है। भाभी देखकर असंतुष्ट होती है, भैया भयभीत)

भाई : अरे सोमा तू ? तू कहाँ से ?

सोमा : शहर से। खेत मैदान पार करके, पहाड़ पार करके—

नौकरानी : भूसे के ढेर के पास मुर्दे की तरह पड़ी थी। साथ मे यह बच्चा था।

भाभी : ठीक है। तू जा, जाकर गाय को सानी-पानी दे।

(नौकरानी का प्रस्थान)

भाई : ये तेरी... भाभी।

भाभी : सुना था रूपनगर मे काम करती हो ?

सोमा : करती थी।

भाभी : तो क्या हुआ ? सुना था काम अच्छा ही था सूबेदार के घर मे ?

सोमा : सूबेदार को मार डाला गया है।

भाई : हाँ हाँ, खबर आयी थी। सुना था कि... बहुत दगा हंगामा हुआ है। तुमनें नहीं सुना ?

भाभी : यहाँ हमारे यहाँ कोई दंगा-हंगामा नही है। शहर के लोग हर समय पगलाये रहते है। (चिल्लाकर) ए पाँचू की माँ, खीर चला दे नही तो नीचे लग जायेगी। अरे ओ पाँचू की माँ। कहाँ गयी फिर ! ओह हो।

(चली जाती है)

भाई : इसका माने . बापू ?

(सोमा सिर हिलाती है)

जो सोचा था वही हुआ। कुछ बात बनानी पड़ेगी। तेरी भाभी इन सब मामलों मे....माने...

(भाभी लौट आती है)

भाभी : इन नौकरों-चाकरों का भी जो हाल है न! यह बच्चा ?

सोमा : मेरा है।

(लड़खड़ा जाती है)

भाभी : हे भगवान्! यह तो बीमार लगती है। अब क्या होगा ?

भाई : बैठ, यहाँ बैठ। वह ऐसे ही....परेशान हो गयी है—

भाभी : माता मैया नही है न ? हे भगवान्, अब क्या होगा ?

भाई : धत्, माता मैया कहाँ दिख रही है ? अरे, इतना रास्ता पार करके आयी है इसीलिए—

भाभी : बच्चा इसी का है न ?

सोमा : हाँ, मेरा ही है।

भाई : (हड़बड़ाकर) वह जा रही थी माने ससुराल जा रही थी सो—

भाभी : ओ। अच्छा चलो, तुम खाने बैठो, सब ठंडा हो जाएगा। ससुराल कहाँ है ?

भाई : उधर, पहाड़ के उस पार।

भाभी : पति वहाँ है ?

सोमा : लड़ाई पर गया है।

भाभी : ओ, सिपाही है।

भाई : हाँ, पर अपने बाप की खेती-बारी मिली है। थोड़ी ही है पर—

भाभी : मिली है ? माने बाप नही है ? माँ ?

भाई : माँ भी नही है। वह अकेले ही—

भाभी : सास नही, ससुर नही तब फिर ससुराल किसके पास

जा रही है?

भाई : पति लौटेगा, लड़ाई खत्म होते ही सो—

सोमा : (बडबडाती है) पति-ससुर-खेतीबारी। खाने बैठेंगे.... खाने.

भाभो : अरे ओ पाँचू की माँ, जलने की गध आ रही है।

सोमा : खेतीबारी है। लड़ाई खत्म होते ही.. लड़ाई।

भाभी : हे राम, यह तो बड़बड़ा रही है। सन्निपात में है।

भाई : (जल्दी से) तुम जल्दी से जाकर देखो नही तो सारी खीर जला डालेगी वो उसकी मॉ ...

(भाभी का प्रस्थान)

रुक, अभी तेरे सोने का इंतजाम किये देता हूँ। जरा देर बैठ। उसका मन बड़ा अच्छा है, समझी। पर.... खाना-पीना पूरा हो लेने दे फिर—

सोमा : इसे पकड़ो।

(बच्चे को भाई की गोदी में देती है)

भाई : पर ज्यादा दिन रहने मे असुविधा होगी, समझी। माने बच्चा है न—लेकर—

(सोमा फिर लडखड़ाने लगती है। भाई निरुपाय खडा रहता है। सूत्रधारो का प्रवेश। चारो ओर फैल जाते हैं और दर्शको से अलग-अलग फुसफुसाकर बात करने लगते हैं। भाई बच्चे को नीचे रखकर चला जाता है। अब सूत्रधार जोर से बोलने लगते हैं। एक आदमी पहले बोलता है फिर सब प्रतिध्वनि की तरह दोहराते हैं)

सब सूत्रधार : सोमा बहुत लाचार हैं। बहुत बीमार भी।
भाई को घर मे रखना पड़ा पर डरतें डरते।

बच्चे के बारे मे किसी को खबर न हो।
बीबी गुस्सा न हो जाये।
रखना पड़ा पुरानी गौशाला मे
पुरानी गौशाला मे।

(सूत्रधार गौशाला की दीवाल बन जाते हैं और घुटनों के बल बैठकर तीन ओर से सोमा को घेर लेते हैं। सोमा की गोद में बच्चा है)

सोमा : सुन भानु, हम लोगों को चालाक होना होगा। इस गौशाला मे छोटे तिलचट्टे की तरह हम लोग छिपकर रहेगे जिससे तेरी मामी की नजर मे हम ज्यादा न पडे। ऐसा कर सके तो शायद जाड़ा कट जाये। लड़ाई तब तक खत्म हो जायेगी। क्या खयाल है, हो जायेगी न ?

(भाई का प्रवेश)

भाई : क्यो रे, क्या खबर है ? ऐसे सिकुड़कर क्यों बैठी है ? कमरा ठडा हो गया है न ?

सोमा : ठंडा ? नही तो।

भाई : नही नही, ठंडे मे तुम लोग तकलीफ पाओगे तो तुम्हारी भाभी को खराब लगेगा।

सोमा : सो तो है। पर ठंडा बिलकुल नही है।

भाई : ओ, तब ठीक है। पुजारी जी आये थे, बच्चे के बारे मे ज्यादा पूछताछ तो नही की ?

सोमा : की थी पर मैने कुछ बताया नही।

भाई : बहुत अच्छा किया। मतलब तेरी भाभी है न—मन की बहुत अच्छी है पर यह सब. समझ रही है न ?. ..हाँ रे, यहाँ चूहे तो नही है न ?

सोमा : नही तो। दिखलाई तो नही पड़े।

भाई : चूहे हो तो फिर तुम लोगो को घर मे ही नही तो तेरी भाभी—

सोमा : नही नही, चूहे नही है। हम यहाँ मजे मे है।

भाई : हाँ, तो क्या कह रहा था ? वो तेरी भाभी है न.. .माने तेरे सिपाही पति को लेकर उसे...कह रही थी कि लौटने पर उसे तुम न मिली तो ? तो मैने कहा—अब जाड़ों मे तो लौटेगा नही। जाड़ा बीते देखा जायेगा —तेरा क्या खयाल है ? जाड़ा बीते लौटेगा तो ?

(सोमा निरुत्तर रहती है। सिर झुका है)

क्यो रे, लौटेगा ही नही क्या ? पर जाड़े के बाद तो लोग आ सकते है। यहाँ पर वैसे ही बच्चे के जन्म को लेकर जरा . सोमा, दक्षिण की हवा लग रही है न ? मतलब जाड़ा खत्म ?

सोमा : (थके स्वर में) हाँ, खत्म।

भाई : सुन, मैने एक उपाय सोचा है। देख, इस बच्चे के कारण तुझे एक....समझ रही है न.. .एक पति की जरूरत है।

(सोमा चौंक जाती है)

वैसा इंतजाम हो जाने पर फिर लोग कुछ न कहेगे। इसीलिए मै चुपचाप पता लगा रहा था कि यदि कोई ... तो पता लगा। एक बुढ़िया का भांजा इस पहाड़ के उस ओर रहता है। छोटा खेत है। माने हम लोगों ने जो किस्सा लोगों को बतलाया है, उसके साथ मेल खाता है। कहने का मतलब बुढ़िया राजी है।

सोमा : ब्याह कैसे कर सकती हूँ भैया ? सुमन लौटेगा न ?

भाई : अरे, तो क्या वह नही सोचा है ? ब्याह दिखावटी होगा, लोगो को दिखलाने के लिए। वह आदमी बहुत बीमार है, एकदम चलाचली का समय है। हो सकता है, ब्याह की रात ही कूच कर जाये। वैसा होने पर तू विधवा हो जायेगी। तो ऐसी विधवा से ब्याह करने पर तेरे उसको कोई आपत्ति तो नही होगी ?

सोमा : होनी तो नही चाहिए।

भाई : यही तो मै कह रहा हूँ। असल मे गवाह और सबूत के बिना काम पूरा नही होता। गवाह और सबूत के बिना तो राजा भी नही प्रमाण कर सकता कि वह राजा है।

सोमा : बुढ़िया कितना मॉग रही है ?

भाई : चालीस टंका।

सोमा : कहाँ से लाओगे ?

भाई . वह इंतजाम कर लूँगा। तेरी भाभी की नजर बचा-कर—

सोमा : ठीक है। मै राजी हूँ।

भाई : तो फिर मै इंतजाम करता हूँ।

(भाई का प्रस्थान)

सोमा : भानु, देख रहा है, क्या-क्या हो रहा है ? उस दिन तुझे छोड़कर चली आती तो ही भला होता।

(चली जाती है। सूत्रधार उठते हैं। एक ओर वर स्थिर शात सोया है।)



सब सूत्रधार : वर सो रहा मृत्यु शय्या पर
कन्या की गोदी में शिशु है। लोगों की नजरो से शिशु को
छिपा रही बुढ़िया। कहती भाई से

जल्दी करो, करो जल्दी अब।
शादी से पहले ही कही न चल दे वर
अब जल्दी करो, करो जल्दी।

(सूत्रधार चले जाते है। बुढिया मौसी का प्रवेश। साथ में भाई व सोमा)

बुढिया : आओ, आओ, देर मत करो। ब्याह का मुहूरत निकल न जाये। बच्चा है, यह तो पहले नही बतलाया था।

भाई : वर का जो हाल है, उसमे क्या आता-जाता है ?

बुढिया : उसका कुछ भी हो, मै तो जिन्दा रहूँगी। बाप रे बाप, कैसी शर्म की बात है, बच्चा गोद में लिये कन्या ब्याह के लिए आयी है। मेरा भाजा एक बच्चे की माँ से, धीगडी औरत से ब्याह करेगा ?

(बनावटी रोना रोती है)

भाई : ठीक है बाबा, तुम दस टंका और ले लेना। खेत तुम्हारा ही रहेगा, हम उस पर कोई हक नही मानेंगे। पर हाँ, एक साल तक इन लोगों को रहने देना होगा।

बुढ़िया : दस मे नही होगा, बीस कर दो। और हाँ, खेत के काम मे हाथ बँटाना होगा, कहे देती हूँ।

भाई : ठीक है बाबा, ठीक है। बीस और।

बुढ़िया : मरनी और श्राद्ध मे ही तो आधी रकम निकल जायेगी। पुरोहित को क्या हुआ, चलूँ देखूँ। मुँहझौसे को आधी रकम पहले देकर ही भूल की। जरूर जाकर ताड़ीखाने मे बैठा होगा।

(चली जाती है)

भाई : बुढ़िया पुरोहित का पैसा भी बचा रही है।

सोमा : सुमन के पूछ-ताछ करने पर उसे यहाँ भेज दोगे न ?

भाई : ले, यह भी कोई कहने की बात है ? हाँ रे, एक बार देखेगी नही ?

सोमा : नही ।

भाई : (वर के पास जाकर) अरे, यह तो हिलडुल ही नही रहा है । देर हो गयी क्या ?

(कई ग्रामवासियों का प्रवेश)

आदमी-१ : हाँ, एक साल तो हुआ ही होगा ।

आदमी-२ : नही, नही, उतना नही हुआ ।

आदमी-१ : नही हुआ माने ? पिछले साल जब हमारी गाय बियायी थी—

आदमी-३ : एक बार यह बीमारी लगी तो फिर छोड़ती नही ।

आदमी-२ : क्या बीमारी है ? सन्निपात ?

आदमी-१ : बीमारी चाहे जो भी हो, आज की रात नही निकलेगी ।

(पुरोहित को लेकर बुढिया का प्रवेश । पुरोहित लड़खडा रहा है)

आदमी-१ : फिर भी कहते है न कि—

बुढिया : यह क्या ? तुम लोग यहाँ क्यों ?

आदमी-१ : श्मशान जाने के लिए आये है ।

बुढिया : भैया, तनिक रुको । पहले ब्याह हो जाने दो—

आदमी-२ : अच्छा, ब्याह भी होना है क्या ? ठीक है. ठीक है ।

(बुढिया सोमा और भाई के पास जाती है)

बुढिया : कमबख्त पुरोहित ने ताड़ीखाने मे सारा किस्सा बतला दिया है । बच्चे को झटपट छिपा दो । उधर.... उस ओर ।

(भाई बच्चे को गोद मे लेकर एक कोने में छिप जाता है)
क्या हुआ ? आओ भाई, आओ। झटपट काम निबटाओ।

(सोमा को वर के पास बैठाती है। पुरोहित भी आकर बैठता है। बुढिया उकडूं बैठती है। गाँव के लोग झाँक-झाँककर देखते है)

पुरोहित : ओम झटपटांग, कटकटांग ब्याहम् स्वाहा। वरम् कन्याम् झटपटाम् ब्याहम् स्वाहा। ओम् सम्प्रदानम्, बलिदानम् सिरदानम् छिंगपटाम् स्वाहा। क्या हुआ, सब लोग गीत गाओ ..ब्याह का गीत।

(ब्याह का गीत होता है)

सवा पाँच आना पैसा रखो।

बुढिया : अलग-अलग पैसा-वैसा नही होगा। जो देना है, एक साथ दूँगी।

पुरोहित : रीति-रिवाज नही मानोगी तो ब्याह भी वैसा ही होगा। बाद मे बहू विधवा हो जाए तो मुझे दोष मत देना।

बुढिया : (जोर से धमकाते हुए) मै पूछ रही हूँ, हुआ या अभी बाकी है ?

पुरोहित : हो रहा है, हो तो रहा है। हाँ बेटी, बोलो, मै—

सोमा : मै

पुरोहित : विवाहम्

सोमा : विवाहम्

पुरोहित : करिच्छन्ति

सोमा : करिच्छन्ति

पुरोहित : बोलो बेटा, मै...बोलो। क्या हुआ, वर तो मंत्र बोल ही नही रहा है ?

मौसो : (हिलाकर) बोल तो रहा है—मै। कान बहरे हो गये हैं क्या ?

पुरोहित : हाँ, हॉ बोल रहा है। बोलो—विवाहम् । हाँ । करिच्छन्ति। हाँ। हो गया। ओम् झटमपटम् विवाहम् बिलकुलम् स्वाहा। हो गया पूरा।

(गाँव के लोग आनद प्रकट करते है। सोमा भाई के पास जाकर बच्चे को लेती है। मौसी भी वही है। पुरोहित उठकर झाँकता है)

मौसो : क्या बात हुई थी ? सत्तर न ?

भाई : नही साठ।

(रुपये देता है)

मौसी : और ये जो इतने लोग आये है, इन्हे न खिलाने-पिलाने से बच्चे को लेकर दस बात करेगे।

भाई : तो इन्हे हटाओ।

मौसी : ये यो ही हटेगे ? एक तो ब्याह, फिर श्मशान जाने की बात। जाओ बोलने से ही चले जायेगे ?

भाई : ठीक है बाबा। यह लो पाँच टंका और। अब और एक पैसा भी नही। मै चलूँ सोमा। यहॉ के लोगों से ज्यादा परिचय करने मे कोई फायदा नही है। कभी हो सके तो मिलने आना, तेरी भाभी बहुत खुश होगी।

(भाई का प्रस्थान। मौसी मिठाई की थाली लिये आती है)

पुरोहित : एक लड़का भी है क्या ?

मौसी : लड़का कहाँ है ? मुझे तो नही दिख रहा ? और तुम्हें भी नही दिख रहा, समझे। इस पर भी तुम्हे दिखा

हो तो मुझे भी तुम्हारे ताड़ीखाने की बहुत-सी बातें दिख जायेंगी, समझे। (गाँववालों से) लो, सब लोग मिठाई खाओ।

आदमी-१ : सुना, महाराज लौट आये है ?

आदमी-२ : लौट आये हैं तो जमीदार लोग उन्हे छोड़ देंगे ? यह सब अफवाह है।

आदमी-१ : नही भाई, सुना कि पास के राज्य के राजा ने सिपाहियो से मदद की है अपने महाराजा की।

आदमी-३ : क्या कह रहे हो ? अरे, पड़ोसी राजा तो अपने दुश्मन है, उन्ही से तो लडाई हो रही है ?

आदमी-१ : आ हा हा, बात समझते क्यो नही ? दुश्मन तो इस राज्य के है न ? मतलब जमीदार के। तो फिर महाराजा के तो मित्र हुए न।

औरत-१ : जो भी हो। लड़ाई खत्म हो गयी है, सिपाही अपने-अपने घरो को लौट रहे है।

(मौसी के कहे अनुसार सोमा इस बीच मिठाई की थाली हाथ मे लिये आकर खडी हो गयी थी। औरत की बात सुनकर चौंक जाती है)

सोमा : क्या, क्या कहा ?

(चक्कर आने से बैठ जाती है)

औरत-२ : क्या हुआ, चक्कर आ गया ?

औरत-१ : फिट-विट का रोग नही है न ?

सोमा : नही, नही, हुआ कुछ नही। सिपाही लौट रहे हैं। सच बात है ?

औरत-१ : और नही तो क्या ? ए, शाल दिखलाओ तो जरा।

औरत-२ : यह लो। एक सिपाही से खरोदा है।

औरत-१ : उस राज्य की चीजे आजकल खूब सस्ती मिल रही है सिपाहियो से ।

औरत-१ : लड़ाई होने पर एक राज्य के राजा की जीत होती है। लेकिन सिपाहियो और हम जैसे लोगों के लिए तो दोनों राज्यो की पूरी हार होती है।

आदमी-३ : क्या हुआ, मिठाई और नही है ?

मौसी : है क्यो नही । लो।

आदमी : इस साल बरसात कैसी होगी, कुछ अदाज लग रहा है ?

(इस बीच वर उठकर बैठ गया है। मिठाई लेकर लौटने पर भाजे को बैठा देख मौसी हक्का-बक्का रह जाती है)

वर : खूब सबको बुला-बुलाकर मिठाई खिला रही हो ? मै क्या रुपये का पेड हूँ ?

(मौसी चुप रहती है । वर उठकर खडा होता है)

खडी खड़ी देख क्या रही हो ? जिस बहू को मेरे माथे मढा है, वह कहाँ है ?

(मौसी को हटाकर आगे बढता है । सोमा एक कोने मे छिपती है)

सूआरो की औलाद, यहाँ ठूँसने आये हो सब ? मेरी श्राद्ध का भोज, क्यो ? चलो भागो, भागो यहाँ से सब ।

(सब भागते है । पुरोहित अतिम कोशिश करता है)

पुरोहित : भगवानम्—

वर : तू भी साले—

(पुरोहित भी भागता है। एक सूत्रधार आता है। वर अपनी जगह पर लौटने लगता है)

सूत्रधार : सोमा के ऊपर बज्रपात।
बच्चा नही था, बच्चा सिर पड़ा।
पति नहीं था, पति सिर पड़ा।
उधर सुमन लौट रहा है। हर दिन और पास।
और पास। और पास।

(चला जाता है। वर बैठता है)

वर : कहाँ है ? वह हरामजादी कहाँ है ?

मौसी : बुलाये देती हूँ। (सोमा से) जा, तुझे बुला रहा है।

(सोमा वर के पास जाती है)

वर : चल, पैर मे तेल मालिश कर।

(सोमा मालिश करने बैठती है)

बहू, हँहँ, नाजायज बच्चा गोद मे लिए बहू आई है मेरे यहाँ। देख, अच्छी तरह समझ ले, अब तेरे उस सिपाही के लौटने पर भी कुछ होना जाना नही है। तू मेरी ब्याहता बहू है।

सोमा : (निष्प्राण भाव से) हाँ !

वर : मगर वह लौटने वाला नही है, यह समझ ले।

सोमा : नही।

वर : बहू। साली क्या काम आयी। मुझे तो किसी और औरत के पास जाना ही पड़ता है। तीन टंका खर्च होता है, ऊपर से इतना पैदल चलना पड़ता है। ए, अच्छी तरह मालिश कर। और कुछ नही ही करेगी तो कम से कम—

(सूत्रधार लोग आकर घुटने मोडकर नदी बनकर बैठते हैं। बाहे लहर की तरह झूम रही है। वर और मौसी चले गये है या फिर सूत्रधारो के साथ नदी बन जाते हैं। वैसी ही गुनगुनाहट जैसी सोमा के पहाड़ पार करते समय सुनायी पडी थी। नदी के किनारे सोमा कपडे धो रही है)

सूत्रधार : सोमा अभी भी जाती है झरने के किनारे
धोने को कपड़ा।
दूसरा झरना है—पहाड़ी झरना।
झरने के पानी मे सुमन का चेहरा।
बनता है, मिटता है, बनता है, मिटता है।
दिन बीता जाता है।
सोमा कपड़े निचोड़ती है। देवदारु के पत्तों के बीच।
बहती हवा की साय सांय मे, सुमन का कंठस्वर सुनती है।
स्वर टूटता है, बिखरता है,
दिन बीता जाता है।
आँखो का पानी और पसीने की बूंदे
झरने के जल मे गिरती रहती है।
दिन बीता जाता है, बच्चा बड़ा होता है।

(झरना के उस ओर सुमन आता है। सोमा की उस पर नजर पडती है)

सोमा : सुमन।

सुमन : रूपनगर के पास के गॉव के झरने के उस पार जिसे देखा था, लगता है वही है।

सोमा : सुमन, तुम लौट आये हो ?

सुमन : बहुत बार लडाई मे बड़े बड़े लोग मर जाते है, छोटे बच जाते है।

सोमा : सुमन। सुमन।

सुमन : अब भी क्या झरने मे पैर डुबाकर बैठना होता है ?

सोमा : नही। झाड़ी की ओर से कोई सिपाही देख रहा हो तो ?

सुमन : सिपाही नही, हवलदार।

सोमा : तनख्वाह पचास टंका ?

सुमन : तुम्हे सब याद है ?

सोमा : हाँ, कुछ भी भूला नही है।

सुमन : मतलब, सब कुछ पहले जैसा ही समझूँ ?

(सोमा सिर झुका लेती है। एक ही धक्के में कठोर धरती पर आ जाती है)

तो पहले जैसा नही है सब कुछ ?

सोमा : सुमन, मै अब रूपनगर लौटकर नही जा सकती।

सुमन : क्यों ?

सोमा : मेरा नाम बदल गया है।

सुमन : समझा नही।

सोमा : लड़कियों का नाम कब बदलता है ?

(सुमन दूसरी ओर घूमता है, हट जाता है। चाकू से मानो पेड की डाल छील रहा हो)

सुमन, पर सब पहले जैसा ही है। हमारे तुम्हारे बीच सब पहले जैसा ही है केवल—

सुमन : पहले जैसा ही है फिर भी नही है ?

सोमा : तुम इधर आओ, मैं तुम्हे पूरी बात बताती हूँ।

सुमन : शायद अब उसकी जरूरत नही रही।

सोमा : है, जरूरत है । तुम इस ओर आओ ।

सुमन : लगता है, लौटने मे बहुत देर हो गयी ।

(सोमा उत्तर नही दे पाती, केवल एकटक देखती रहती है । सूत्रधार जो नदी बने हुए थे, उठकर सुमन के पास आते हैं)

सूत्रधार : कितनी बाते कही जाती है।
कितनी अनकही ही रह जाती है।
सिपाही लौटा है । कहाँ से लौटा है, कह सकता था पर कहा नही । कह सकता था—

(सुमन और वे सब मानो सेना के अग हो । परेड करते है, वैसी ही ध्वनि करते हैं)

सुमन : लड़ाई शुरू हुई ।
सुबह की धूमिल लड़ाई, दोपहर तक रक्त से रंग गयी।
मेरे सामने एक आदमी गिरा । पीछे एक और।
बगल मे एक के पेट मे बल्लम लगा, वह भी गिरा ।

(एक-एक करके सब चीखते हुए गिरते हैं)

चेहरे पर आँच की गर्मी, हाथ पर बर्फीली हवा ।
पेट में भूख की ज्वाला, तालाब मे मटियाला जल ।

(सुमन पड जाता है । सूत्रधार उसे घेरकर ऐसे अंग संचालन करते हैं मानो वे ही आँच, बर्फीली हवा और भूख हो)

मै सोया हूँ पत्थर पर, घास पर, दलदली जमीन पर ।

सूत्रधार : कहा जा सकता था पर कहा नही गया ।

सब सूत्रधार : कहा जा सकता था पर कहा नही गया । कहा जा सकता था पर कहा नही गया ।

(सूत्रधार फिर नदी बन जाते हैं । सुमन उठता है)

सुमन : बाल-बच्चे ?

सोमा : बच्चा है, पर मेरा नही।

सुमन : जानने को और कुछ नही बचा।

(नदी से लड़कियाँ उठती हैं, उठकर सोमा को घेर लेती हैं। उनमे से एक सूत्रधार बनती है)

सूत्रधार . प्रतिज्ञा टूट गयी। कहने को बचा ही क्या ?
कहने को कितना कुछ होता है पर अनकहा रह जाता है। सोमा कह सकती थी—

(वे सब सोमा को घेर कर पहलेवाले सूत्रधार की तरह अग सचालन करती है। सोमा बोलती है)

सोमा : तुम जब लड़ रहे थे मैदान मे सिपाही के रूप मे।
मै तब एक असहाय शिशु को गोद मे छिपाये फिर रही थी।
मुझ मे शक्ति नही थी कि मै उसे मरने को छोड़ देती।
मैने बीन-बटोरकर खुद आया, उस शिशु को खिलाया।
मैने अपने आपको छिन्न-भिन्न कर डाला, तार-तार कर डाला, टुकडे टुकडे कर डाला।

सब सूत्रधार : किसकी खातिर ?

सोमा : जो मेरा नही है, किसी और का है, उसकी खातिर।
मै न बचाती उसे तो कौन बचाता, बोलो ?

(सूत्रधार फिर नदी में लौट जाते हैं)

सूत्रधार : कहा जा सकता था पर कहा नही गया।

सब सूत्रधार : कहा जा सकता था पर कहा नही गया।

सुमन : ताबीज लौटा देना ही ठीक है। पर जाने दो। झरने के जल मे फेंक दिया जाय उसे।

सोमा : सुमन, तुम जाओो मत। वह बच्चा मेरा नही है सुमन।

(सूबेदार के कर्मचारी आते हैं, साथ में दो सिपाही हैं, उनके साथ भानु है)

कर्मचारी : यह रही, यहाँ।

(अब तक आवाज एक समान आ रही थी। अब बंद होती है। सुमन जाते-जाते रुक जाता है)

सोमा : क्या हुआ ? भानु !

(भानु को लेने को बढती है पर रोक दी जाती है)

कर्मचारी : तुम्हारा नाम सोमा है।

सोमा : हाँ।

कर्मचारी : यह बच्चा तुम्हारा है ?

(सोमा सुमन की ओर देखती है। सुमन ध्यान से सुनता है)

सोमा : हाँ।

(सुमन जाने लगता है)

सुमन !

कर्मचारी : इस बच्चे को रूपनगर ले चलना होगा।

(सुमन का प्रस्थान)

ऐसा संदेह है कि यह लड़का सूबेदार अग्निप्रताप सिंह का लड़का और उत्तराधिकारी भानुप्रताप सिह है। यह रहा सरकारी परवाना।

(भानु को लेकर जाने लगता है। सोमा पीछे दौड़ती है)

सोमा : नही, यह मेरा बेटा है ! इसे कहाँ ले जा रहे हो ? मेरा बेटा, मेरा....मेरा।

(वे चले जाते हैं। सूत्रधार नदी छोडकर उठ आते हैं। बाद का संवाद वे आपस में बाँटकर बोलते हैं)

सूत्रधार : अपना बेटा, पराया बेटा। सिपाही लेकर चले गये उसे।
पीछे पीछे चली एक दुखी लड़की। चली शहर की ओर।

एक भयानक शहर की ओर। वहाँ विचार होगा।
कौन माँ है, किसका वह बेटा है, इस पर विचार होगा।
विचारक कौन है ? वह भला है ? या बुरा ?
शहर मे चारों ओर आग लगी है।
और विचारपति के आसन पर विराजमान हैं—
कीर्तिचाँद।
अब सुनिए किस्सा विचारक जी का।
कैसे वे विचारक बने, कैसे वे विचारक है, कैसे वे
विचार करते है
सब किस्सा सुनिए।
जिस दिन सूबेदार की गद्दी गयी।
राजधानी मे, शहर-शहर मे आग लगी।
सूबेदार अग्निप्रताप की हत्या हुई।
उसके दो दिन बाद, शहर के बाहर
किसी एक गाँव की सीमा पर, जंगल के पास
कीर्तिचाँद को दिखा एक तिरस्कृत भिखारी
ले आया उसे वह अपनी झोपड़ी मे।

(दो व्यक्ति दरवाजा बनते है, बाकी चले जाते हैं। कीर्तिचाँद दरवाजा ढकेलकर खोलता है और भीतर जाता है, सग में भिखारी के वेश मे महाराजा। कीर्ति दरवाजा भीतर से बद करता है)

कीर्ति : सीधे खड़ा होकर चल, साला हरामी का पिल्ला। और नाक पोछ। सिपाही जब पकड़ेगे तो नाक बहती देखकर बिगड जायेगे। चल बैठ उस ओर। भूख लगी है ?

(महाराजा सिर हिलाता है)

ठहर, देखूँ क्या है। यह ले, दो रोटियाँ है। खा।
(जल्दी-जल्दी खाने से महाराजा के गले में रोटी फँसती है)
लगता है, कई दिनो से तूने खाया नही है ?

(महाराजा सिर हिलाता है)

तू उस तरह दौड़ा क्यो ? न दौडता तो सिपाहियों की नजर तुझ पर पड़ती ही नही।

महाराजा : और कोई उपाय नही था।

कीर्ति : सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी थी, क्यो बे ?

(महाराजा इस भाषा से परिचित नही है। आँखें फाडे देखता रहता है)

अरे बता न, हुआ क्या था ? क्या कपड़ा बिगड़ गया था ? धत्तेरे की, सीधी सी बात नही समझता। मै पूछता हूँ, डर गया था तू ? देखो, देखो, बडे सूअर की तरह ओठ चाट रहा है—ठीक महाराजा की तरह।

(महाराजा चौंकता है मगर कीर्ति का ध्यान उधर नही जाता)

भलेमानस चोर उच्चकों से हमे कोई एतराज नही होता। पर तेरे जैसा भला। देखूँ, देखूँ, तेरा हाथ देखूँ। हूँ, साफ, गोरा मुलायम। भिखारी नही है तू, किसान भी नही है। तब जरूर ही जुआ चोर है। और मुझे देख, मै तुझे सिपाहियो के हाथ से बचा रहा हूँ, जैसे... जैसे तू अच्छी नस्ल का चोर हो। ए, तू कौन है, बतला तो ? जमीदार ? हाँ, जरूर वही होगा। साला, पक्का कसाई है। निकल बाहर, चल उठ, भाग यहाँ से।

महाराजा : (पीछे हटते-हटते) अनुसरण। आश्रय की आवश्यकता। एक प्रस्ताव—

कीर्ति : एक क्या ? प्रस्ताव ? साला मुझे प्रस्ताव दिखा रहा है। निकल बाहर—

महाराजा : धैर्य ! थोडी-सी सहानुभूति। एक लाख टंका पुरस्कार। राजी ?

कीर्ति : सोचता है मुझे खरीदा जा सकता है ? एक लाख टंका मे मुझे खरीदा जा सकता है ? हाँ न ? साला ! चल उसे डेढ लाख कर। कहाँ है टंका तेरा ?

महाराजा : साथ मे नही है। इंतजाम हो जाएगा, बहुत जल्दी। आशा है अब सदेह नही रहा।

कीर्ति : जरूर है। भाग यहाँ से।

(दरवाजे के बाहर शिवदास)

शिवदास : कीर्तिचाँद।

कीर्ति : घर मे नही हूँ।

(महाराजा खरगोश की तरह दौडकर एक कोने में छिपता है। कीर्ति दरवाजा खोलता है)

शिवदास चौकीदार ! फिर तुम सूँघते-सूँघते पहुँच गये ?

शिवदास : कीर्तिचाँद, तुमने फिर खरगोश पकड़ा है जाल बिछाकर ? तुमने कहा था न, आगे कभी वैसा न करोगे।

कीर्ति : जो तुम समझते नही, उसके बारे मे फालतू बकते क्यों हो शिवदास ? खरगोश अर्थात् शशक बड़ा खतरनाक और सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट कर देने वाला जीव है। पेड़-पौधे खा-खाकर नष्ट कर देता है, खासकर झाड़-झंखाड जैसे उपयोगी पौधे जरूर खा जाता है। इसी-

लिए खरगोश मारना बहुत जरूरी है।

शिवदास : कीर्ति, मुझे इस तरह मुसीबत मे मत डालो। तुम्हें इस बार अदर न किया तो मेरी नौकरी जरूर चली जाएगी। मै जानता हूँ, तुम मन के अच्छे हो—

कीर्ति : मन के अच्छे की बात नही है। मैने कितनी बार कहा है न कि मै बुद्धिजीवी हूँ।

शिवदास : वह तो हो ही। तुममे सबसे ज्यादा बुद्धि है, यह तुम खुद बहुत बार बता चुके हो। मै, मै ठहरा मूरख, बे पढ़ा-लिखा। मुझे तुम एक बात समझा दो। मै जमीदार के जंगल का चौकीदार। जंगल से यदि जमीदार का खरगोश चोरी जाय तो अपराधी के बारे मे मेरे लिए क्या करना उचित है ?

कीर्ति : छिः, छिः, शिवदास, तुम ऐसा बेवकूफी का सवाल करोगे, यह नही सोचा था। इतनी सीधी सी बात। मै खरगोश पकड़ता हूँ, तुम आदमी पकड़ते हो। आदमी मे आत्मा होती है, खरगोश मे नही—इतनी जानकारी तुम्हे है न ? मै खरगोश खाता हूँ, तुम आदमी खाते हो, आदमी जिसमे आत्मा होती है, आत्मा जो भगवान की दी होती है, इस तरह देखा जाय तो तुम खुद भगवान को खाते हो। इसलिए भगवान तुम्हारा विचार करेगे। जाओ, घर जाओ, मन शुद्ध करके प्रायश्चित्त करो।

(भौंचक शिवदास को बाहर निकालकर दरवाजा बद करते-करते रुकता है)

नही नही, जरा रुको तो।

(एक बार छिपे हुए महाराजा की ओर देखता है, सोचता है)

नही, ठीक है। जाओ, जाकर प्रायश्चित्त कर डालो।

(दरवाजा बंद करके सिटकिनी लगाता है। शिवदास चला जाता है। महाराजा कोने से बाहर आता है)

क्यो रे, तुझे पकड़ा नही दिया, इसका ताज्जुब हो रहा है न ? क्या करूँ, इस जानवर के हवाले तो किसी कीड़े को करने का भी मन नही करता। लो, इसकी कंपकंपी तो बंद ही नही हो रही है। एक चौकीदार देखा और हाथ-पैर एकदम ठडे हो गये ? ले, खा। अरे गरीबो की तरह खा नही तो पकड़ जायेगा। क्या, गरीब लोग कैसे खाते है यह बताना पड़ेगा। चल आ, इधर आ, उकड़ूँ बैठ। रोटी हाथ मे छिपाकर रख, ऐसे मानो कोई छीनने को आ रहा हो। इतना निश्चित होकर खाने से कैसे चलेगा ? हाँ, अब रोटी की ओर उदास भाव से देख। सब अच्छी चीज की तरह रोटी भी खत्म होने को आयी। चल, अब खा। (अपने आप) उन लोगो ने तुझे खदेड़ा है, इसका मतलब ही है कि तू कोई खास आदमी है। मगर उन लोगों ने भूल नही की, इसका प्रमाण ? कहने का मतलब यह कि...सिपाहियों के खदेड़ने के बावजूद मै तुझ पर पूरी तरह विश्वास नही कर पा रहा हूँ।

(दो सूत्रधारो का प्रवेश। एक हत्थेदार कुर्सी और फाँसी की रस्सी पर लटकाया न्यायाधीश का चोगा लिये है। उनकी बातचीत के शुरू मे ही कीर्ति दरवाजा खोलकर महाराजा को चला जाने देता है। फिर खुद भी चला

जाता है। दरवाजे वाले दोनो आदमी भी चले जाते हैं। बाते करते-करते सूत्रधार कुर्सी यथास्थान रखते हैं, चोगा एक ओर ऐसे लटका देते हैं मानो विचारक फाँसी पर झूल रहा हो)

सूत्रधार-१ : इस तरह बुद्धिजीवी कीर्तिचाँद ने एक बूढ़े भिखारो को आश्रय दिया।

सूत्रधार-२ : दिया ?

सूत्रधार-१ : खाने दिया, सोने दिया, चला जाने दिया।

सूत्रधार-२ : उसके बाद ?

सूत्रधार-१ : उसके बाद जाना कि वह बूढ़ा भिखारी देश का सबसे बड़ा कसाई था।

सूत्रधार-२ : कौन ?

सूत्रधार-१ : खुद महाराजा।

सूत्रधार-२ : सच ?

सूत्रधार-१ : लज्जा से गर्दन झुक गयी कीर्तिचाँद की।

सूत्रधार-२ : हाँ, और क्या।

सूत्रधार-१ : तब चौकीदार ने शिवदास को बुलाकर हुक्म दिया—

सूत्रधार-२ : क्या हुक्म ?

सूत्रधार-१ : उसे बाँधकर रूपनगर ले जाने का।

सूत्रधार-२ : क्यो ?

सूतधार-१ : अदालत मे, विचार के लिए।

सूत्रधार-२ : अच्छा !

(दोनों का प्रस्थान। इस बीच तीन सिपाही आकर एक ओर बैठ जाते हैं, शराब पीते हैं। बाहर से कीर्तिचाँद की चिल्लाहट सुनाई पड़ती है)

कीर्ति : महाराजा ! महाचोर ! महाखूनी।

(कीर्ति का प्रवेश। हाथ रस्सी से बँधे है। रस्सी का दूसरा छोर शिवदास के हाथ में है किन्तु असल में कीर्ति ही उसे खीचे लिये आता है)

महाराजा महाचोर हैं महाखूनी है। मैने उन्हे भागने मे सहायता दी है। मै विचार चाहता हूँ। खुले आम अदालत मे मेरा विचार हो।

सिपाही-१ : यह चिड़िया कहाँ की है?

शिवदास : पास के गाँव की—नाम कीर्तिचाँद। पहले कचहरी मे मुर्हारिर था।

कीर्ति : मै नरक का कीड़ा हूँ, मै विश्वासघातक हूँ। ए मूर्खाधिराज, बतलाओ न इन लोगो को कि मैने खुद तुमसे कहा है कि मुझे बाँधकर ले चलो। क्यो? क्योंकि मैने गलती से महाराजा को, महाचोर, महाखूनी, महाकसाई को आश्रय दिया। उस भूल का पता चलने पर रात के अतिम पहर में तुम्हें—पैदल चलाकर यहाँ लाया हूँ ताकि शहर की अदालत मे मेरा विचार हो सके। बतलाओ सब इन लोगों को।

शिवदास : (थके और ऊब भरे स्वर में) क्या बतलाऊँ? कच्ची नीद से उठाकर, डरा-धमकाकर जबरदस्ती मुझे ले आये, यह तुमने अच्छा नही किया।

कीर्ति : चुप करो। तुम कुछ नही समझते। एक नया युग आ रहा है। आ क्या रहा है, आ गया है। सब कुछ को अपनी बाढ़ मे बहा ले जायेगा। तुम्हे भी। जितने अपराधी हैं, सबका विचार होगा। क्यों? क्योकि जनता के रोष से किसी भी अपराधी को मुक्ति नहीं मिलेगी। सबका विचार होगा। मैं पहला अपराधी

हूँ। बधुओ, मै विचार चाहता हूँ। विचारक कहाँ है?"

सिपाही-१ : यह रहे विचारक!

(फाँसी पर लटकता शरीर दिखला देता है)

सिपाही-२ : और हाँ, हमे बंधु-टधु मत कहना।

कीर्ति : यह रहे विचारक! सुनते हो शिवदास? पहले कभी इस देश मे ऐसा जवाब नही सुना गया। विचारक कहाँ है? लटक रहे है। राजा कहाँ है? जल रहे है। मत्री कहाँ है? सियार खा रहे है। क्यों? क्योकि नया युग आ गया है, जनता जाग गयी है।

सिपाही-१ : जनता?

(वे उठकर पास आते हैं)

सिपाही-२ : (कीर्ति की गरदन पकडकर) भैया रसिकचाँद, उधर का आकाश लाल हो गया है, कुछ दिखलाई पड़ रहा है?

कीर्ति : हाँ, क्यों?

सिपाही-१ : लोहारो की बस्ती जल रही है—तुम्हारी जनता की बस्ती। उन लोगो ने एक सवाल पूछा था—जमीदार विपुल वर्मा की तोद किनके मुँह का कौर छीनकर बढ़ रही है?

सिपाही-२ : आज सुबह लोहारो ने विचारक को फाँसी पर लटका दिया और हम लोगो ने अच्छी तरह उनकी पिटाई करके उनके घरो मे आग लगा दी।

सिपाही-१ : जमीदार विपुल वर्मा से आदमी पीछे एक सौ टंका मिला है हमे। कुछ समझ मे आ रहा है?

कीर्ति : (ठडा पडकर) आ रहा है।

सिपाही-२ : (नकल उतारते हुए) बंधुओ!

सिपाही-१ : ए, यह साला कुछ गोलमोल करने की फिराक मे है।

सिपाही-२ : हॉ, ऐसा ही लग रहा है।

शिवदास : नही नही, आदमी बुरा नही है। बीच-बीच मे कभी-कदास दो-एक मुर्गी चुरा लेता है। बहुत हुआ तो खरगोश, बस।

सिपाही-१ : क्यो रे मुर्गीचोर ? साले, कुछ झमेला खड़ा करने के इरादे से आया है क्या ?

कीर्ति : क्यो आया हूँ, यह मुझे खुद नही पता।

सिपाही-२ : लोहारों का दोस्त नही है न ?

सिपाही-३ : तब से 'बंधुओ', 'नया युग', 'जनता' की झड़ी लगाये हो ?

कीर्ति : वह सब तो यों ही, बात की बात—

सिपाही-१ : और वह महाराजा की क्या बात कह रहा था उस समय ?

कीर्ति : मै कह रहा था कि—भूल से मैने साले को भाग जाने दिया।

शिवदास : यह सच है, मै गवाह हूँ।

(वे घेर लेते हैं मानो मारेंगे। कीर्ति दाँत निपोरकर हँसते हुए स्थिति को सम्हालने का प्रयत्न करता है। अचानक वे सब हो-हो करके हँसने लगते है। उसका बधन खोल देते हैं और पीठ थपथपाते हैं। कीर्ति सबसे जोर से हँसता है। सब शराब लेकर बैठते है। जमीदार विपुलवर्मा अपने भाई के लडके को साथ लिये आता है)

विपुल : बधुओ !

सिपाही-१ : यह रहा, तेरा नया युग !

(सब जोर से हँसते हैं)

विपुल : इतना हँसने की क्या बात हो गयी ? मुझे तो हँसने जैसा कुछ नहीं दिख रहा है। इससे तो बंधुओ, यदि सुनना चाहो तो मै एक काम की बात बतलाऊँ। परसों जमीदारी की मिली-जुली शक्ति ने इस देश के लड़ाकू महाराजा और उसके अत्याचारी सूबेदार के बदनाम शासन को खत्म कर दिया है। दुर्भाग्य से महाराजा को पकड़ा नही जा सका। ऐसे संगीन अवसर पर इस शहर के लोहर पाड़ा के लोग कुछ गोलमाल करने की नीयत रख रहे थे। इन सब समाज विरोधी लोगों ने हमारे सम्माननीय विचारक की हत्या कर दी है। जो भी हो, अब देश मे शांति की जरूरत है, न्यायविचार की जरूरत है। इसीलिए मैं अपने भतीजे को साथ लाया हूँ। इतनी कम उम्र मे कानून का ऐसा गहरा ज्ञान कम लोगों मे दिखलाई पड़ता हैं। इसलिए यह हम लोगो का नया विचारक हो तो सबका कल्याण हो। क्या खयाल है ? अवश्य ही आप सब राजी होगे तभी—मतलब जनता की रजा-मंदी सबसे जरूरी है न ?

सिपाही-१ : कहते क्या हैं ? विचारक कौन होगा, यह हम तै करेंगे ?

सिपाही-२ : हम ?

विपुल : और नही तो क्या ? नया युग आया है, इसमे जनता ही सब तै करेगी। आप लोग अब आपस मे राय सलाह कर लीजिए।

(सिपाही एक ओर हो जाते है। विपुल वर्मा भतीजे को लेकर दूसरी ओर)

विपुल : चिंता मत कर। विचारक तुझे ही बनाऊँगा। महाराजा जब तक पकड़े नही जाते है तब तक इन सालो की खातिर करनी ही होगी।

सिपाही-१ : मजा देख ? महाराजा को पकड नही सका तो साला हम लोगो के पास आया है और आकर 'बंधुओ,' 'जनता का मत' बड़ी-बड़ी बाते झाड़ रहा है।

सिपाही-३ : न्यायविचार, न्यायविचार भी।

सिपाही-१ : ठीक है, जब तक साला मौज कर सके, कर लेने दो।

सिपाही-२ : हाँ, कर ले साला।

(वे लौट आते है)

सिपाही-१ : हाँ, तो यह आदमी न्याय के सम्बन्ध मे सब कुछ जानता है। यह साला बदमाश है। तू ही बता, इस साले भतीजे को विचारक बनाया जा सकता है ?

कीर्ति : मुझसे पूछ रहे हो ? माने मै... मै बतलाऊँ ?

सिपाही-२ : हाँ, हाँ, बता न ! क्या हर्ज है। जरा मजा रहेगा।

कीर्ति : उनकी पहले परीक्षा लेनी चाहिए, यही न ! बिलकुल ठीक। ए, आस-पास कोई आसामी है ? माने कोई पक्का पापी ? हो तो इनके न्याय करने की विधा तुरंत देख ली जाय !

सिपाही-१ : पक्का पापी ? अब यह तो झझट का काम हुआ न !

सिपाही-२ : हाँ, इस मुहल्ले मे दो वकील जरूर है।

कीर्ति : अरे भाई, असल पापी से काम नही चलेगा। विचारक की नियुक्ति होने से पहले असली अपराधी का विचार नही किया जा सकता। किया तो काम गैर कानूनी

होगा। वैसे, इस समय दोनो वकीलो को लाकर फाँसी पर लटका दिया जा सकता है क्योकि विचारक अभी है नही, फाँसी पर झूल रहा है इसलिए ऐसा करने से कानून भंग नही होगा।

सिपाही-२ : साला, न्यायमूर्ति बन रहा है।

सिपाही-१ : तब फिर क्या किया जाय ?

कीर्ति : मै आसामी बनता हूँ।

सिपाही-१ : तू ?

(वे हँस पडते है)

सिपाही-२ : ठीक है, चल, तू ही चल।

विपुल : तब फिर क्या तै रहा ?

सिपाही-१ : जॉच होगी। यह आसामी बनेगा, भतीजा विचार करेगा।

विपुल : ऐसा नियम नही है फिर भी चलने दो। (भतीजे को अलग ले जाकर) चिंता मत कर, विचारक तू ही होगा।

(कीर्तिचाँद महाराजा की मुद्रा मे आकर खडा होता है। महाराजा की नकल करके बोलता है)

कीर्ति : आशा है आप मुझसे परिचित है। महाराजा।

सिपाही-३ : क्या, क्या कहा यार ?

सिपाही-२ : महाराजा। पर लगता है साला जमेगा।

कीर्ति : ध्यान दिया जाय। अभियोग—लड़ाईबाजी का। हास्यास्पद अभियोग। "मै" कहता हूँ, हास्यास्पद। इस बात का पर्याप्त प्रमाण ? प्रमाण न हुआ तो, वकील लोग उपस्थित है पाँच सौ के आस-पास। इनके बैठने की व्यवस्था की जाय।

(सिपाही जोरों से हँसते हैं)

हुक्म से,! इस जमीदार की तोंद इतनी बढी है, मेरे विशेष हुक्म से ।

(सिपाहियो का अट्टहास)

विपुल : (फुसफुसाकर) जवाब दो, जवाब दो । डरते क्यों हो ? मै जो हूँ ।

भतीजा : मेरा जवाब है—अदालत की शान बनाये रखने के प्रश्न को लेकर । प्रतिवादी का फर्ज है कि वह अदालत की शान मे बट्टा न लगाये ।

कीर्ति : मै सहमत हूँ । मेरा हुक्म है कि विचारक विचार करे ।

भतीजा : विचारक को हुक्म देने का अधिकार प्रतिवादी को नही है । प्रतिवादी ने अभी-अभी कहा कि जमीदारो ने उसे लडाई छेड़ने की सलाह दी । मगर उन लोगो ने डुबाया भी, यह किस आधार पर कहा जा रहा है ?

कीर्ति : बहुत मजबूत आधार पर । भरपूर सेना नही भेजी, खजाने से रुपये गायब कर दिये, फालतू घोड़े भेजे । लड़ाई के समय शराबखाने मे धुत पड़े रहे, लड़कियों के साथ मजा मारते रहे । विपुल चाचा या ताऊ गवाही दें ।

भतीजा : प्रतिवादी का क्या मतलब कि जमीदारो ने लड़ाई नही की ?

कीर्ति : की क्यो नही, जरूर की । रसद भेजने की ठीकेदारी को लेकर लड़ाई की ।

(सिपाहियो का अट्टहास)

विपुल : बात हद से बाहर जा रही है । यह आदमी मजदूरों जैसी बातें कर रहा है ।

कीर्ति : सच के सिवा और कुछ नही कहा गया है।

विपुल : इसे फॉसी दी जाय।

सिपाही-१ : अरे साहब, बात दबा जाइए न!

सिपाही-२ : महाराज, चालू रखिए।

(भतीजा उछलकर उठ खड़ा होता है। उत्तेजित हो गया है और उसके बातचीत करने का ढंग कीर्ति अर्थात् महाराजा की तरह हो जाता है)

भतीजा : खामोश। अब फैसला सुनाया जाता है। गवाही मंजूर। अपराध—लड़ाई मे हार—साबित हुआ। सजा— अपराधी को फॉसी—अभी तुरन्त।

कीर्ति : मेरी आंतरिक सलाह जनता के सामने इस ढंग से बात न करने की। जनता यदि देखे कि महाराजा और जमीदार एक ही ढंग से बात कह रहे है तभी शायद फाँसी दे महाराजा और जमीदार को।

विपुल : उसे फाँसी दी जाय।

कीर्ति : मगर इसी बीच फैसला रद्द करना होगा। कारण—लड़ाई मे हार हुई है पर जमींदारों की जीत हुई है। सबूत–तीन लाख बयासी हजार टका लाभ हुआ है—घोड़ो के दाम की बावत, घोड़े जो भेजे ही नही गये।

विपुल : उसे फॉसी दी जाय।

कीर्ति : आठ लाख छप्पन हजार टंका लाभ—खाने-पीने की रसद के बावत, जो खेत मे खड़ी है, खलिहान मे पड़ी है।

विपुल : उसे फाँसी दी जाय।

कीर्ति : अतः जीत हुई है। हार हुई है तो देश की और देश अदालत मे अनुपस्थित है।

विपुल : उसे—,

(सिपाहियो का अट्टहास । विपुल सम्हलता है)

ठीक है, ठीक है । हे रसिकराज, अब तुम जा सकते हो । हाँ, तो फिर बंधुओ, नये विचारक की नियुक्ति पक्की की जाय ?

सिपाही-१ : हाँ, पक्की की जाय ।

(कीर्ति लौटकर शिवदास के पास जाकर बैठता है)

ए, विचारक का चोगा उतारकर ला तो ।

(दूसरे सिपाही चोगा उतारकर लाते हैं)

(भतीजे से) लो, उठो तो बेटा । नये विचारक को बैठने दो । (कीर्ति से) ए साले, बदमाश । चल उस ओर । ले, बैठ वहाँ । बैठ ।

(कीर्ति को चोगा पहनाकर विचारक के आसन पर बैठा दिया जाता है । हक्का-बक्का से विपुल और भतीजा, दोनो पीछे हटते हैं)

साला, विचारक हमेशा ही बदमाश रहे । चलो, इस बार एक बदमाश विचारक हुआ ।

सिपाही-२ : साला कमाल हो गया ।

सिपाही-३ : साला विचारक जैसा विचारक ।

(अट्टहास । विपुल और भतीजा चले जाते हैं । दो सूत्रधारो का प्रवेश)

सूत्रधार-१ . देश में गृहयुद्ध छिड़ा है जमीदारो के साथ महाराजा की लड़ाई ।

सूत्रधार-२ : सिपाही इस ओर भी है, उस ओर भी, ज्यादातर स्वयं अपनी ओर है ।

(सिपाहियो का अट्टहास । कीर्ति उठकर गंभीरतापूर्वक चहलकदमी करता है)

सूत्रधार-१ : कीर्तिचाँद सिपाहियों द्वारा चुना गया विचारक है, उसे हटाये कौन ?

सूत्रधार-२ : दो साल विचारक रहा कीर्तिचाँद ।

(सिपाहियो का अट्टहास)

सूत्रधार-१ : जब शहर मे आग लगी, चारो ओर लूटपाट—

(हो-ओ-ओ-आवाज करते हुए सिपाही तेजी से बाहर भाग जाते हैं)

सूत्रधार-२ : जब हर दरबार मे षड्यत्र और दाँव-पेंच का बोलबाला था—

सूत्रधार-१ : टूटे मकान के कोने अतरे मे जब तिलचट्टे चारो ओर चक्कर काट रहे थे—

सूत्रधार-२ : उस समय विचारक के आसन पर आसीन हुआ—

दोनो सूत्रधार : कीर्तिचाँद ।

(सूत्रधारो का प्रस्थान । शिवदास घर पोछता है । महाजन, वृद्ध, लगडा और छोकरा आकर अलग-अलग जगह बैठ जाते हैं या, खडे रहते हैं)

कीर्ति : सरकारी वकील !

शिवदास : हुजूर ?

कीर्ति : कानून की मोटीवाली किताब यही फैलाओ, बैठूँगा जरा ।

(शिवदास कुर्सी पर काल्पनिक किताब फैलाता है । कीर्ति बैठता है)

मुकदमो की संख्या बहुत बढ़ गयी है, दो मुकदमे एक साथ करने होगे । हम लोगों का काम शुरू होने के

पहले एक विशेष घोषणा है—अदालत ग्रहण करती है।

(एकमात्र छोकरा कीर्ति के फैले हाथ मे कुछ काल्पनिक पकडाता है। कीर्ति महाजन की ओर देखता रहता है। महाजन दृष्टि हटा लेता है)

अदालत की बात न मानने के कारण कुछेक लोगों को सजा हो सकती है। सुना आप चिकित्सक है, और आप गाँव के महाजन—इस वैद्य के खिलाफ शिकायत लेकर आये है। क्या शिकायत है?

महाजन : हुजूर, इसके कारण मुझे दिल की बीमारी हो गयी है।

कीर्ति : मतलब, इलाज की भूल के कारण ?

महाजन : उससे भी खराब कारण से हुजूर। इसकी पढ़ाई के लिए टंका मैने उधार दिये। अभी भी मूल और सूद दोनो की बड़ी रकम बाकी है लेकिन फिर भी कुछ दिन पहले इसने एक रोगी का मुफ्त इलाज किया। यह खबर सुनकर ही मुझे दिल की बीमारी हो गयी।

कीर्ति : होती ही (लंगडे से) आपकी क्या शिकायत है ?

लंगड़ा : (लगड़ाते हुए आगे आता है) मै ही वह रोगी हूँ हुजूर !

कीर्ति : आपके पैर का इलाज इसने मुफ्त किया ?

लंगड़ा : हाँ हुजूर, पर गलत पैर का। मेरे बाये पैर मे गठिया है पर दाहिने पैर को चीर-फाड़ की गयी। इसीलिए अब लगड़ा रहा हूँ।

महाजन : चीर-फाड़ हुजूर ! पाँच सौ टंका दक्षिणा। मुफ्त कर दिया !

वैद्य : हुजूर, चीर-फाड़ करने के पहले ही दक्षिणा लेने का रिवाज है। इस मामले में मेरा ख़याल था कि मेरे

सहकारी ने दक्षिणा ले ली है। यही मेरी भूल हुई हुज़ूर।

महाजन : भूल हुई ? अच्छे वैद्य से ऐसी भूल होनी चाहिए ?

कीर्ति : बिलकुल नही। ए सरकारी वकील !

शिवदास : हुज़ूर ?

कीर्ति : दूसरा मुकदमा क्या है ?

शिवदास : (छोकरे को दिखलाकर) दबाव डालकर रुपये वसूल करने का।

छोकरा : धर्मावतार, मेरा कोई कसूर नही है। मैने जमीदार से जानना चाहा था कि सचमुच उन्होंने अपनी भतीजी के साथ बलात्कार किया था या नही। उन्होने साफ-साफ कहा कि बात सही नही है। और मेरे छोटे भाई की पढाई चालू रखने के लिए मुझे कुछ टंका दिये।

कीर्ति : (वैद्य से) आपके पास कोई ऐसा तर्क या कारण नही है ?

वैद्य : हुज़ूर, मै इतना ही कह सकता हूँ कि भूल सभी से होती है।

कीर्ति : हाँ, मगर दक्षिणा के बारे मे वैद्य से भूल होना अस्वाभाविक अपराध है। सुना है आजकल व्यापारी लोग अपने लड़को को चिकित्सा शास्त्र पढा रहे है जिससे वे व्यापार मे लाभ करना सीख सके। (लडके से) ए लड़के, जमीदार का नाम ?

छोकरा : वे नाम का उल्लेख नही चाहते।

कीर्ति : तब फिर अदालत अपनी राय देगी। दबाव डालकर रुपये वसूलने का अपराध प्रमाणित हो गया है और

(महाजन से) आपका जुर्माना हुआ एक हजार टंका। दुबारा दिल की बीमारी होने पर यह वैद्य आपका मुफ्त इलाज करेगा, जरूरत पड़ने पर चीर-फाड़ भी। (लगडे से) पैर पर मालिश करने के लिए आपको एक शीशी आश्चर्य मलहम दिया जायेगा। (लड़के से) तुम जब नाम नही बतला रहे हो तो जमीदार से मिले टंका मे से आधा सरकारी वकील के पास जमा कर देना। और अदालत तुम्हे चिकित्सा शास्त्र पढ़ने की सलाह देती है, उस दिशा मे तुम्हारा दिमाग काम करता है। (वैद्य से) आपने ऐसा अपराध किया है जो माफ नही किया जा सकता अतः आपको छुट्टी। अगला मुकदमा।

(महाजन, वैद्य, लगडा और छोकरा एक-एक करके चले जाते है। दो सूत्रधारो का प्रवेश। पीछे-पीछे तीन जोतदार और एक बुढिया)

सूत्रधार-१ : बड़ो की लड़ाई मे।

सूत्रधार-२ : कभी-कभी छोटो का फायदा।

सूत्रधार-१ : उन सब कीड़े-मकोडो का विचार करनेवाले विचारक का नाम—

दोनो सूत्रधार : कीर्तिचाँद।

(सूत्रधारो का प्रस्थान)

कीर्ति : सरकारी वकील !

शिवदास : हाँ हुजूर।

कीर्ति : अदालत की कार्यवाही शुरू करो।

शिवदास : हुजूर, एक गाय का मामला है। (बुढिया को दिखलाकर) आसामी की गोशाला मे पिछले एक महीने से एक

गाय खड़ी है। गाय के मालिक थे—जनार्दन जोत-
दार। इसके अलावा इसके घर मे एक कोल्ला मछली
भी मिली है जिसके मालिक थे—वृन्दावन जोतदार।
और काशीनाथ जोतदार की एक टुकड़ा जमीन पर
आसामी साझेदारी मे खेती करती है। हिस्सा वसूल
करने की चेष्टा करने के ठीक बाद काशीनाथ की
पाँच बकरियाँ मरी पायी गयी।

जनार्दन : हुजूर, गाय मेरी है।

वृन्दावन : हुजूर, कोल्ला मछली मेरी है।

काशीनाथ : हुजूर, बकरियाँ मेरी थी।

कीर्ति : बुढिया दादी, तुम्हे क्या कहना है ?

बुढ़िया : बेटा, बात ठीक ऐसी नही है। करीब एक महीना पहले सबेरे-सबेरे मेरी झोपड़ी के दरवाजे पर किसी ने धक्का मारा। दरवाजा खोलकर देखा—एक संन्यासी खड़े थे, उनके साथ एक गाय थी। संन्यासी महाराज बोले—मै सत रत्नाकर हूँ, मुझमे दैवी शक्ति है। तुम्हारे दो बेटे लड़ाई मे मारे गये हैं इसलिए यह गाय तुम्हे दिये जा रहा हूँ। अच्छी तरह देखभाल करना।

जनार्दन : रतन डाकू था हुजूर।

वृन्दावन : इस बुढ़िया की बहन का लड़का है हुजूर।

काशीनाथ : बड़ा खूँखार डाकू है हुजूर, फाँसी दीजिए उसे।

(बाहर शोरगुल। हुकार भरते हुए रतन का प्रवेश)

रतन : हर हर महादेव।

सभी जोतदार : यही रतन है।

रतन : हुजूर की जय हो। एक पात देशो मिल जाय सरकार।

कीर्ति : सरकारी वकील, मेहमान के लिए एक पात्र देशी।
(शिवदास शराब देता है, रतन एक घूंट में पात्र खाली कर देता है)
आप कौन ?

रतन : मै संन्यासी हूँ। एक पात्र और बेटा।
(कीर्ति के इशारे पर शिवदास एक पात्र और देता है)

कीर्ति : अदालत संन्यासी का स्वागत करती है। बैठिए। बुढिया दादी, अपनी बात पूरी करो।

बुढिया : बेटा, इनमे दैवीशक्ति है यह पहले समझ मे नही आया।

कीर्ति : समझना मुश्किल है।

बुढ़िया : उस समय तो खालो गाय समझ मे आयी। मगर उसी रात जोतदार के नौकर गाय ले जाने के लिए आये पर वे घूमघाम कर लौट गये। उनके चेहरे और सिर पर बडे-बड़े काले-काले गुरमे निकल आये। तब मेरी समझ मे आया कि संत रत्नाकर ने इन लोगों की बुद्धि ठीक ठिकाने लगा दी है।
(रतन का अट्टहास)

जनार्दन : बुद्धि कैसे बदली, मुझे पता हैं हुजूर।

कीर्ति : बहुत अच्छा, बाद मे बतलाइएगा। उसके-बाद बुढ़िया दादी ?

बुढिया : उसके बाद काशीनाथ बाबू की बुद्धि ठिकाने आयी। संत बाबा की कृपा से उन्होने जमीन की भागीदारी माफ कर दी।

काशीनाथ : हुजूर, मेरी पाँच-पाँच बकरियाँ—
(रतन का अट्टहास)

कीर्ति : बात चालू रखो दादी।

बुढ़िया : उसके बाद आज सुबह। एक कोत्ला मछली उड़कर अपने आप खिड़की से मेरी झोपडी मे आ गयी। आयी और आकर गिरी यहाँ—मेरी कमर पर। देखिए हुजूर, अभी भी सीधी नही चल पा रही हूँ।

(चलकर दिखलाती है)

कीर्ति : हाँ, कहाँ चल पा रही है।

बुढ़िया : अब आप ही विचार कोजिए हुजूर, मुझ जैसी गरीब दुखियारी बुढिया देवीशक्ति के बिना दस सेरी कोत्ला मछली कहाँ पा सकती है ?

(रतन सहानुभूति से भरकर सिसकता है)

कीर्ति : बुढिया दादी, तुम्हारी इस अतिम बात ने अदालत का मर्म स्पर्श किया है। तुम यहाँ आकर बैठो (बुढिया को अपने आसन पर बैठाता है) सब लोग देखो—ये बुढिया दादी हम सबकी, पूरे देश की दादी है—हम कह सकते है देशदादी। दुखी माँ, लड़के मर गये लड़ाई मे, एक गाय मिली तो दादी को रोना आ गया। मार पड़े तो इन्हे आशा बनो रहती है, मार न पड़े तो ताज्जुब होता है। दादी, हम लोग जो अभिशप्त है, उन पर तुम्हारी न्यायपूर्ण नजर सदा रहे। (जोतदारो से) नास्तिक कही के ! तुम लोग दैवोशक्ति पर विश्वास नही करते। नास्तिकता के कारण तुम सब पर दो-दो सौ टका जुर्माना किया जाता है। जाओ, बिदा हो।

(जोतदारो का प्रस्थान)

दादी, तुम अच्छी तरह मछली का झोल बनाओ। और तुम, संत रत्नाकर चलो सरकारी वकील और मेरे साथ, एक पात्र और हो जाये।

(बुढ़िया का प्रस्थान। कीर्ति, शिवदास और रतन भीतर जाते है। दो सूत्रधारो का प्रवेश। शिवदास और कीर्ति ही ये सूत्रधार बन सकते हैं)

सूत्रधार-१ : कानून को तोड़कर कानून के टुकडे।
वैसे ही जैसे रोटी को तोड़कर रोटी के टुकड़े।
गरीबो के बीच दो साल मे बिला गया—विचारक कीर्तिचाँद।
दो साल तक शिकारी कुत्ता बन लड़ता रहा
भेड़ियों के साथ—विचारक कीर्तिचाँद।

सूत्रधार-२ : मगर दिन बीतते ही है।
(विपुल और दो सिपाही मानो लडते-लडते भाग रहे हैं, उन्हे मार भगाते हुए पीछे-पीछे और सिपाही आते हैं। उनके पीछे पूरे साज-बाज के साथ महाराजा। उसके पीछे सूबेदारनी और अन्य कर्मचारी। एक ओर से उन सबका प्रवेश—एक जुलूस की तरह—दूसरी ओर प्रस्थान)
अराजकता के दिन बीते।
पड़ोसी राजा की सहायता से महाराजा लौटे।
साथ मे लौटा सूबेदारों का झुड।

सूत्रधार-१ : और लौटी हमारे सूबेदार की पलातका गृहिणी।
(बाहर सिपाहियो का गर्जन, विपुल की चीत्कार। विपुल को बाँधे हुए सिपाही लेकर आते और चले जाते हैं)
हारते है, मरते है जमीदार के दलवाले।

सूत्रधार-२ : मरते है ढेरों सिपाही, अनगिनत लोग
गरीबों के मकान नये सिरे से जलाये जाते हैं।

सूत्रधार-१ : कीर्तिचाँद के मन मे समाया डर"

(कीर्ति चोगा उतारता है । शिवदास बैठा है)

कीर्ति : सरकारी वकील शिवदास चौकीदार, तुम्हारी दासता के दिन पूरे हुए । बहुत दिनो तक मेरे अकाट्य तर्कों की जंजीर ने तुम्हे बाँध रखा, मेरे सूक्ष्म विश्लेषण ने तुम्हे चाबुक मारा । चरित्र से तुम दुर्बल हो, ऊँचे स्तर के किसी आदमी का हाथ चाटे बिना तुम्हारा काम नही चलता । मगर ऊँचे स्तर के लोगो के बीच भी स्तर होते है । अब, मेरे हाथ से मुक्ति पाने के बाद, तुम्हारा स्वभावगत छोटापन, तुम्हारी नीचता तुम्हे चालित करेगी । अपने से कमजोर आदमी के मुँह पर अपना भारी भरकम पैर चाँपना । कमजोर आदमी को कुछ दिनों के लिए छुट्टी मिली थी अराजकता के युग मे—अराजकता मतलब छाती पर राजा के पैरो से मुक्ति । कुछ दिन । इन कुछ दिनों मे बड़े आदमियों के मुँह सूखे है बहुत बार, कलेजा काँपा है अनगिनत बार । गरीबो के सामने बराबर हाथ जोड़ना पड़ा है उन्हे । आर्तस्वर मे पुकारा है—राजा, आओ, फिर से व्यवस्था स्थापित करो, अराजकता खत्म हो । अब छुट्टी खत्म हुई । भैया शिवदास, कानून की वह मोटीवाली किताब ले आना जरा, वही जिस पर मै बैठता हूँ । देखूँ तो, वे मेरी क्या-क्या दुर्गति करेंगे । यहाँ बिछाओ ।

(शिवदास जमीन पर किताब फैलाता है । कीर्तिचाँद उस पर बैठता है)

हूँ । खून करने पर गरीब को मैंने रिहा कर दिया है

—इसलिए मुझ पर जुर्माना होगा। कानून का बारह बजाया है, इसलिए कैद। बड़े आदमियों की जेब मे झाँका है मैने, इसलिए फाँसी। बचने का कोई उपाय नही है, सब मुझे पहचान गये है।

(बोलते-बोलते किताब कुर्सी के नीचे रखता है)

शिवदास : कोई आ रहा है।

कीर्ति : (डरते हुए) आ रहा है ? आ गया ? मतलब अंत आ गया ? एक महान् विचारक के दर्शनो की अभिलाषा लिये वे आ रहे है। मै उनकी वह इच्छा पूरी न होने दूँगा। मै घुटनो के बल बैठकर उनसे भीख माँगूँगा, सारा शरीर थरथर काँपेगा, प्राणों के डर के मारे मुँह से फिचकुर (फेन) निकलेगा।

(सूबेदारनी और कर्मचारी का प्रवेश। कीर्ति दूसरी ओर घूमकर घुटनो के बल बैठता है)

सूबेदारनी : वह कौन जानवर है ?

(उछलकर कीर्तिचाँद पास आता है)

कीर्ति : हाथ की कठपुतली हुजूराइन, मुझसे जो चाहे, करवा सकती हैं।

कर्मचारी : स्वर्गीय सूबेदार अग्निप्रताप सिंह की धर्मपत्नी लौट आयी है। उनके दो साल के बेटे को लेकर एक पुरानी नौकरानी उत्तर के पहाड़ों मे भाग गयी है।

कीर्ति : उसे पकड़ बुलाया जायेगा हुजूराइन—मैं आपका गुलाम हूँ।

कर्मचारी : सुनने मे आया है कि वह नौकरानी उसे अपना लड़का बतला रही है।

कीर्ति : नौकरानी की गरदन उड़ा दी जायेगी हुजूराइन, मै

आपका गुलाम हूँ।

कर्मचारी : ठीक है। ता हम चले अभी।

सूबेदारनी : यह आदमी मुझे कुछ ठीक नही लगता।

कीर्ति : मै आपका गुलाम हूँ हुजूराइन, सब इंतजाम हो जायेगा।

(उनका प्रस्थान। कीर्ति और शिवदास भीतर की ओर भागते हैं। सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : अब सुनिए विचार का किस्सा।
सूबेदार के लड़के की माँ कौन है, इसके विचार का किस्सा।
सुप्रसिद्ध खड़िया के घेरे के विचार का किस्सा।

(इस बीच दो सिपाही भानु को लेकर आते और भीतर की ओर जाते हैं। सोमा और रसोईदारिन का प्रवेश। सूत्रधार का प्रस्थान)

सोमा : वह अब अपने आप नहा सकता है।

रसोईदारिन : तेरी किस्मत अच्छी है कि वह आदमी सचमुच का विचारक नही है। यह तो वही शराबी कीर्तिचाँद है। विचारक का 'वि' भी नही समझता, सब घालमेल कर देता है। चोर-छिछोरे छूट जाते है, बड़े आदमी घूस देने पर भी छुटकारा नही पाते। बल्कि ज्यादातर गरीब-दुखियारों की ही जीत हो जाती है।

सोमा : हे भगवान, वैसा ही हो।

रसोईदारिन : भगवान से मना कि वह आज शराब मे धुत्त होकर आये। पर एक बात कहूँ—जब वह तेरा अपना बेटा नही है तब फिर उसे लेकर इतनी जिद क्यो कर रही है ? देख तो रही है, आजकल समय अच्छा नही है।

सोमा : वह मेरा है। उसका लालन-पालन मैंने किया है।

रसोईदारिन : उसकी माँ के लौटने पर क्या होगा, यह कभी नहीं सोचा ?

सोमा : पहले सोचा था—आने पर दे दूँगी। फिर सोचा अब नही लौटेगी।

रसोईदारिन : खैर, चल छोड़। तेरी ओर से जो गवाही देनी होगी, मै दूँगी। सुमन से उस दिन बात हो रही थी। उसे पता है कि बेटा तेरा नही है, पर तूने ब्याह क्यों किया, यह वह किसी तरह नही समझ पा रहा है।

सोमा : इस समय मै सुमन की बात सोच ही नही पा रही हूँ।

(इस बीच सुमन आकर खडा हो गया था। सोमा उसे नही देख पायी थी, रसोईदारिन उसे चुटकी काटकर सावधान करती है)

सुमन : (रसोईदारिन से) मै एक बात इससे कह रखना चाहता हूँ—जरूरत पड़ने पर मै यह कहने को राजी हूँ कि मै बच्चे का पिता हूँ।

(सोमा गरदन हिलाती है)

एक और बात। मै अभी भी स्वतंत्र हूँ।

रसोईदारिन : यह कहने से क्या फायदा ? उसका तो ब्याह हो चुका है।

सुमन : इसकी याद दिलाने की जरूरत नही है।

(बैठता है। भीतर से दो सिपाहियों का प्रवेश)

सिपाही-१ : कहाँ गया, ऐ ?

सिपाही-२ : क्या पता ?

(बाहर से हवलदार का प्रवेश। उसे देखकर सोमा और रसोईदारिन आड में छिपने की कोशिश करती हैं)

हवलदार : ए, विचारक कहाँ है, पता है तुझे ?

सिपाही-२ : यहाँ तो नही दिखता।

सिपाही-१ : पूरा मकान खोज डाला—एक फटा बिछौना और एक खाली शराब की बोतल—बस।

हवलदार : ठीक है, तुम दोनो मेरे साथ आओ।

(सोमा को देखकर हवलदार रुक जाता है)

सिपाही-१ : क्या हुआ ?

हवलदार : नही, कुछ नही। चलो

(सबका प्रस्थान)

रसोईदारिन : ऐ, क्या बात है ? कीर्तिचाँद को कुछ हो गया है क्या ? दूसरा कोई विचारक हुआ तो तेरे लिए कोई उम्मीद नही है। (सोमा को भयभीत देखकर) क्या हुआ ?

सोमा : दीदी, इस हवलदार के सिर पर मैने डंडा मारा था।

रसोईदारिन : इस आदमी के ?

सोमा : हाँ।

रसोईदारिन : चिंता मत कर, वह बात यह दबा जायेगा। नही तो यह जाहिर न हो जायेगा कि वह जमीदार की ओर से बच्चे को खोजने निकला था।

सोमा : यह बात मै भूल ही गयी थी।

(सूबेदारनी, कर्मचारी और वकील का प्रवेश)

वकील : कही कोई दिखलाई ही नही पड रहा है।

कर्मचारी : झंझट-झमेला के डर से सब दरवाजा बद करके घर के अन्दर बैठे है।

सूबेदारनी : अच्छा ही है। उनके शरीर की गंध से मेरे सिर मे

दर्द होने लगता है।

वकील : जरा सावधानी से बात कीजिए। इस विचारक को जब तक नही हटाया जाता तब तक—

सूबेदारनी : कुछ भी तो नही कहा। मुझे आम आदमी बहुत अच्छे लगते है, कितना सरल मन होता है उनका। केवल उनके शरीर की गंध से मेरा सिर दर्द करने लगता है—यही कह रही थी।

वकील : आह ! धीरे, धीरे।

सूबेदारनी : (सोमा को दिखलाकर) यह जानवर ?

वकील : दया करके जरा भाषा पर काबू रखिए। अभी तक कोई ऐसी खबर नही मिली है कि महाराजा ने नये विचारक की नियुक्ति कर दी है।

कर्मचारी : मगर विचारक गया कहाँ ?

वकील : रुकिए, देखता हूँ।

(प्रस्थान)

रसोईदारिन : कीर्ति की जगह कोई और विचारक होता तो देखते, अब तक सूबेदारनी तेरी दोनो आँखें निकलवा लेती। कैसे देख रही है, देखा ?

(कीर्ति को गरदन से पकडे हवलदार का प्रवेश। पीछे दो सिपाही शिवदास को बाँधे लिये आते हैं)

हवलदार : भाग रहा था, ऐं ? भाग रहा था ? साला।

(वह कीर्ति को धक्का देता है। दूसरा आदमी उसे पकड़ता है और फिर धक्का देता है। इस प्रकार वे एक दूसरे की ओर कीर्ति को ठेलते रहते हैं मानो गेंद खेल रहे हो)

विचार। विचार करेगा ? साला-ले, विचार ले। ले।

सूबेदारनी : (ताली बजाकर) यह आदमी मुझे सदा से नापसन्द रहा है।

(कीर्ति गिर जाता है। दो सिपाही उसे हाथ पकड़कर खीचकर उठाते है)

कीर्ति : मै-मै देख नही पा रहा हूँ....मुझे खून पोछने दो।

हवलदार : देखना क्या है साले ?

(मुंह पर एक घूसा मारता है। कीर्ति गिर जाता है)

कीर्ति : कुत्ते को... समझे, कुत्ते को देखूंगा। अबे ओ कुत्ते, क्या खबर है ? कुत्तो की दुनिया कैसो चल रही हैं ? कैसी गध है उस दुनिया की ? चाटने के लिए नये जूते मिल गये न ? आपस मे दॉत कटौवल शुरू हो गयी न ? कुत्ते ?

(बोलते-बोलते किसी तरह कीर्ति उठकर खडा होता है। अन्य सब इतनी देर तक आश्चर्य मे भरे बाते सुनते रहते है)

हवलदार : लटका दो साले को।

(हवलदार के घूसे से कीर्ति छिटककर दूर जा पड़ता है। सिपाही मूर्छित कीर्ति के गले में फाँसी का फंदा डाल देते हैं)

सिपाही : चल, चल ले आ रस्सी। लटका दिया जाया साले को। विचार करेगा, साला।

(राजकर्मचारी का प्रवेश। साथ मे एक लबा चौडा हवलदार)

राजकर्मचारी : यह सब क्या हो रहा है यहाँ ?

राज-हवलदार : खबरदार।

राजकर्मचारी : सुनिए, सब लोग सुनिए। मै राजधानी से महाराज

का हुक्मनामा लेकर आया हूँ...नया नियुक्ति पत्र। यह रहा, महाराज की सील-मोहर।

राज-हवलदार : खबरदार।

(सब चुप हो जाते है)

राजकर्मचारी : (हुक्मनामा पढते हुए) महाराज के मूल्यवान जीवन की जिस व्यक्ति ने रक्षा की थी, उस व्यक्ति को इस हुक्मनामे के अनुसार रूपनगर सूबे का विचारक नियुक्त किया जाता है। और वह व्यक्ति है—कीर्तिचाँद। कहाँ है, वे कहाँ है ?

शिवदास : यह रहे हुजूर।

(मूर्छित कीर्ति की ओर दिखलाता है)

राजकर्मचारी : यह क्या ?

राज-हवलदार : (जोर से) यह सब क्या हो रहा है यहाँ ?

(हवलदार जल्दी से कीर्ति के गले से रस्सी खोलकर उसे खडा करता है। दो सिपाही विचारक का चोगा लाकर उसे पहना देते हैं)

हवलदार : हुजूर, विनीत निवेदन है। विचारक कीर्तिचाँद पहले भी विचारक थे। स्थानीय तीन जोतदारो ने शिकायत की है कि कीर्तिचाँद महाराजा के शत्रु है। इसीलिए इन्हे—

राजकर्मचारी : वे कौन है ? उनके नाम ?

हवलदार : हुजूर, जनार्दन, वृन्दावन और काशीनाथ।

राजकर्मचारी : गिरफ्तार !

राजहवलदार : जल्दी।

हवलदार : गिरफ्तार ! जल्दी !

(दो सिपाही जल्दी से जाते है। हवलदार कीर्तिचाँद को कुर्सी पर बैठाता है)

राजकर्मचारी : विचारक कोर्तिचाँद को कोई अब हाथ न लगाये।

(उन दोनो का प्रस्थान)

कर्मचारी : (सूबेदारनी से) सत्यानाश हो गया। हम लोगों का वकील गया कहाँ ?

रसोईदारिन : (सोमा से) ताली बजा-बजाकर हँस रहा था। कीर्ति ने देखा हो तो मजा आये।

(कीर्ति उठकर हवलदार की ओर जाता है। हवलदार सलाम करता है)

हवलदार : हुकुम हुजूर ?

कीर्ति : कुछ नही कुत्ता भाई। अपने इस कुत्ते भाई को बीच-बीच मे जूते-चूते चाटने देना, बस ! (शिवदास से) तुम्हे माफ किया जाता है—तुम रिहा।

(हवलदार जल्दी से शिवदास का बधन खोल देता है)

जाओ भाई, एक गिलास देशी ले आओ तो।

(शिवदास भीतर जाता है)

जाओ भाई, बिदा हो, एक मामले का विचार करना है।

(हवलदार का प्रस्थान। शिवदास गिलास लाकर देता है। वकील लौट आता है)

कानून की मोटी किताब फैलाओ, बैठूँगा।

(शिवदास कुर्सी के नीचे से किताब निकालकर कुर्सी पर फैलाता है। कीर्ति गिलास खत्म करके उस पर बैठता है। इस बीच एक अत्यन्त बूढ़े दम्पति आकर बैठते हैं)

एक विशेष घोषणा—अदालत ग्रहण करती है।

रसोईदारिन : (सोमा से) मरे।

(वकील के इशारे पर कर्मचारी कीर्ति के हाथ में टका थमा जाता है)

कीर्ति : अदालत की कार्यवाही शुरू हो।

वकील : मामला बहुत मामूली है, हुजूर। आसामी इनके लड़के को लेकर भागी थी और अब लौटाने से इनकार कर रही है।

कीर्ति : (सोमा को देखकर) वाह, बुरी नही है। मै पूरी सच्चाई जानना चाहता हूँ—विशेषकर (सोमा से) तुम्हारे मुँह से।

वकील : माननीय विचारपतिजी, खून का सम्बन्ध दुनिया भर मे सबसे पवित्र सम्बन्ध माना जाता है। शास्त्रों मे कहा गया है—

कीर्ति : अदालत जानना चाहती है कि वकील साहब की दक्षिणा क्या है?

वकील : जी ?

कीर्ति : दक्षिणा, दक्षिणा! मामला पीछे।

वकील : अ....पाँच सौ टंका।

कीर्ति : बहुत अच्छे....बहुत अच्छे। यह इसलिए पूछा कि दक्षिणा के अनुपात मे ही मै मामले की ओर ध्यान देता हूँ। आपकी दर अच्छी ही है।

वकील : धन्यवाद धर्मावतार। हाँ, तो मैं खून के सम्बन्ध की बात कर रहा था। सबसे गहरा और सबसे पवित्र खून का सम्बन्ध होता है माँ और उसकी संतान का। माननीय विचारपतिजी, इन्होंने संतान को दस महीना

गर्भ मे धारण किया, बड़े कष्ट से जन्म दिया और अपना रक्त पिला-पिलाकर उसको पुष्ट किया। इस पवित्र और घनिष्ठ रक्त के सम्बन्ध को दुनिया मे कोई नही मिटा सकता। माँ की गोद से संतान को कोई नही छीन सकता। यहाँ तक कि जंगल मे रहनेवाली बाघिनी भी संतान को खोकर पागल होकर—

कीर्ति : (सोमा से) इन्होने जो कुछ अब तक कहा और आगे जो-जो कह सकते है, उसके बारे मे तुम्हें क्या कहना है?

सोमा : बेटा मेरा है।

कीर्ति : बस ? इतना ही ? सबूत ? तुम्हे यों ही लड़का कैसे दे सकता हूँ ?

सोमा : मैने अपनी सामर्थ्य भर उसका लालन-पालन किया है। प्रायः हर दिन कुछ खिलाया है। ज्यादातर सिर छिपाने के लिए कही न कही जगह ढूँढ़ी है। और.... और बहुत तकलीफ पायी है। अपने सुख की बात ही नहीं सोची। उसे सबके साथ मिलजुलकर रहना सिखाया है, दूसरों को प्यार करना सिखाया है। बहुत से काम सिखाये है। कहने का मतलब, जो वह कर सकता है—अभी बहुत छोटा है न।

वकील : माननीय विचारपतिजी, ध्यान दीजिए, आसामी कही भी खून के सम्बन्ध की बात नहीं कर रही है।

कीर्ति : अदालत के ध्यान मे यह बात है।

वकील : धन्यवाद। इस ओर देखिए—दुखिया माँ, पति चला गया, संतान भी न चली जाय इस डर से व्याकुल—इसकी बात भी सुनिए।

सूबेदारनी : (जोर से रोते हुए) माननीय विचारपति जी, मेरे दुर्भाग्य का अंत नही है। पिछले दो साल मे कितनी रातें आँखों-आँखों मे कटी है—

कर्मचारी : (अचानक उत्तेजित होकर) धर्मावतार, इन महिला के साथ बहुत अन्याय हुआ है। इनके पति का महल इन्हे नही सौपा जा रहा है, इनकी सम्पत्ति का भोग करने का अधिकार नही दिया जा रहा है। कहा जा रहा है कि सारी सम्पत्ति बेटे के नाम है। लड़का वापिस मिले बिना ये वकील को दक्षिणा तक—

वकील : (उसे ठेलकर हटाते हुए) आह ! ये सब बाते इस समय यहाँ—माननीय विचारपतिजी, यह बात सच है कि संतान वापिस मिलने पर सम्पत्ति का मालकियाना भी तै होगा, पर वह बड़ी बात नही है। असल बात है मानवता की। असल प्रश्न है मातृहीन संतान और संतानहीन माँ की वेदना का। भानुप्रताप के सम्पत्ति का उत्तराधिकारी न होने पर भी यह प्रश्न तो खड़ा ही रहता। इसलिए माननीय—

कीर्ति : रुकिए। सम्पत्ति के उल्लेख ने अदालत के मर्म को स्पर्श किया है। मानवीय अनुभूतियो का प्रमाण है।

वकील : धन्यवाद, धर्मावतार। हम प्रमाणित कर सकते है कि जो लड़की लड़के को लेकर भागी थी वह उसकी असल माँ नही है। यदि आज्ञा दे तो मै सबूत अदालत के सामने पेश करूँ। दो साल पहले जब बड़ी मुसीबतो मे पड़कर, स्वर्गीय सूबेदारजी की धर्मपत्नी को महल छोड़कर भागना पड़ा था तब दुर्भाग्य यह हुआ कि भूल से उनका बेटा वही छूट गया। उसके बाद उसे

इस लड़की के पास पाया गया—

रसोईदारिन : (उछलकर) रानी माँ उस समय कौन-कौन सी साड़ियाँ ले जायेगी, यह चुनने में लगी थी।

वकील : (रोकते हुए) दो साल बाद इसे उत्तरी पहाड़ी के एक गाँव मे देखा गया। तब तक इसका विवाह हो चुका था वही के एक—

कीर्ति : (सोमा से) तुम उत्तरी पहाड़ी तक कैसे पहुँची ?

सोमा : पैदल, पैदल हुजूर।

सुमन : (अचानक) हुजूर, मैं इस लड़के का पिता हूँ।

रसोईदारिन : (साथ-साथ) हाँ हुजूर, इन लोगो ने मुझसे इस लड़के की देखरेख करने को कहा था पाँच टंका महीना देते थे—

वकील : हुजूर, इस लड़के के साथ इस लड़की का प्रेम है। इसकी गवाही विश्वास योग्य नही है।

कीर्ति : (सोमा से) उत्तरी पहाड़ी मे तुम्हारा इसके साथ ब्याह हुआ ?

सुमन : नहीं हुजूर, इसका ब्याह वहाँ के एक किसान के साथ हुआ है।

कीर्ति : (सोमा से) क्यो ? यह तुम्हे पसंद नहीं था ? सच-सच बतलाना।

सोमा : मैने ब्याह किया ताकि भानु को आश्रय मिल सके। यह उस समय लड़ाई पर था।

कीर्ति : अब लौटने पर तुम्हे चाह रहा है ?

सुमन : मैं कह रहा था कि—

सोमा : मेरे हाथ-पैर बँधे हैं अब—

कीर्ति : मै जानना चाहता हूँ कि यह दोगला छोकरा किसका है ? किसी भिखमंगे का या बड़े आदमी का ?'

सोमा : (गुस्से से) किसी का भी हो। यह एक बच्चा है, बस।

कीर्ति : आहाँ! मै इतना जानना चाहता हूँ कि इसके चेहरे की पालिश कैसी है ?

सोमा : इसकी नाक सुन्दर है।

कीर्ति : बहुत अच्छा उत्तर है। लोगों मे ऐसा प्रचलित है कि मै भी विचार करने से पहले अपनी सुन्दर नाक से गुलाब का फुल सूँघा करता हूँ। खैर, हटाओ यह सब। अब संक्षेप मे बात समेटी जाय। और झूठी बातें सुनने से कोई लाभ नही। (सोमा से) खासकर तुम्हारे मुँह से। तुम सबको मै अच्छी तरह पहचानता हूँ, तुम सब महा धोखेबाज हो।

सोमा : (धीरज खोकर) आप क्या विचार करेंगे, मुझे पता है। हाथ फैलाकर 'ग्रहण' करते आपको मैंने देखा है।

कीर्ति : चुप ! तुमसे कुछ 'ग्रहण' किया है मैने ?

सोमा : मेरे पास है ही क्या ?

कीर्ति : ठीक, तुम्हारे पास कुछ नही है। जिनके पास कुछ नहीं है, उनसे मैं कुछ नही ग्रहण करता। तुम विचार चाहती हो, इसके लिए तुमने कभी कुछ दिया है ? बाजार मे कुम्हड़ा भी खरीदें तो चुपचाप दाम पकड़ाएँगे पर अदालत मे विचार करवाने ऐसे आ जाते हैं जैसे श्राद्ध का न्योता खाने आये हों।

सुमन : (अचानक जोर से) कहावत है न पागल गाय से खाली गौशाला भली।

(उत्तेजित होकर कीर्ति उठ खडा होता है, मानो लडाई का आह्वान मिल गया हो)

कीर्ति : हाँ, और यह भी कहावत है कि खाली घुड़साल से

लंगड़ा घोड़ा भला।

सुमन : जो भी हो, बाप न मारी मेढ़की, बेटा तीरंदाज।

कीर्ति . अदालत मे व्यर्थ की बाते करने के कारण तुम पर दस टंका जुरमाना किया जाता है—अब समझ मे आयेगा विचार क्या होता है।

(विजयी वीर की तरह कीर्ति बैठता है)

सोमा : आग लगे ऐसे विचार मे। हम लोग इस पढ़े-लिखे वकील की तरह अपनी बात सजा सँवारकर नही कह पाते इसीलिए—

कीर्ति : बिलकुल ठीक। तुम लोग महामूर्ख हो इसलिए तुम्हारा मरना ही उचित है।

सोमा : लड़के को उसे दीजिएगा। वह कपड़े मे पायखाना करेगा तो यह औरत उसे साफ कर सकेगी ? विचार का जितना ज्ञान आपको है उतना मुझे भी है।

कीर्ति : लाख बात की एक बात कही है तुमने। सचमुच, मुझे ज्ञान-वान कुछ खास नही है। न ज्ञान हुआ न पैसा पास आया। इस चोगे के नीचे फटा कुर्त्ता है। जो मिलता है वह खाने-पीने मे खत्म हो जाता है, कपड़ा लत्ता बन ही नही पाता। हाँ, अदालत का अपमान करने के लिए तुम पर भी जुर्माना किया जाता है—दस टका। इतना और सुन लो कि तुम एक महामूर्ख लड़की हो। यह नही कि जरा छिनालपना दिखलाकर मुझे रिझाओ, बदले मे आलतू-फालतू बातें करके मुझे नाराज ही कर रही हो। इस मूर्खता के लिए दस टका और जुर्माना—कुल रकम बीस टंका।

(सोमा गुस्से से पागल हो उठती है। रसोईदारिन और

सुमन्त उसे किसी तरह नही सम्हाल पाते)

सोमा : तीस टंका जुरमाना होने पर भी कहूँगी। विचार करने के लिए कुर्सी पर बैठा है एक बदमाश शराबी। तुम्हें शर्म नही आती ? इन लोगों के घर मकान की पहरे-दारी ही कर रहे हो न तुम ? बड़े आदमियों के पहरे-दार कुत्ता....पैर चाटनेवाले नौकर, तुम जैसे लोग विचारक की कुर्सी पर बैठे है इसीलिए माँ से छीनछीन-कर लड़कों को लड़ाई पर भेजा जा रहा है—मरने के लिए। पता है पता है, तुम बच्चे को मुझसे छीनकर उन लोगो को सौप दोगे। फिर भी कहे बिना मानूँगी नही—इस विचारक की गद्दी पर जो भी बैठता है वह एक नंबर का चोर, गुडा, बदमाश, लुच्चा, जुआचोर होता है। तुम्हारे विचार को थुडी है—

(थूकती है। लगता है कीर्ति सोमा को रुकने का आदेश दे रहा है पर असल में वह सोमा की बातों से बडा खुश है, खुशी के मारे हाथ हिलाहिलाकर ताली बजाता है क्योंकि विचारको के सम्बन्ध मे सोमा की धारणा से वह पूरी तरह सहमत है)

कीर्ति : लो, तीस टंका हो ही गया। ज्यादा दरमोलाई नही करूँगा, यह तरकारी बाजार तो है नही। विचारक की मर्यादा का खयाल तो करना ही होगा। खैर छोड़ो, तुम लोगों का यह मुकदमा मुझे अब और अच्छा नहीं लग रहा है। ए, सरकारी वकील !

शिवदास : हुजूर।

कीर्ति : जो पति-पत्नी विवाह-विच्छेद चाह रहे थे, उन्हें बुलाओ तो। तुम लोगो का मुकदमा अभी फिलहाल

मुलतबी रहा।

वकील : (सूबेदारनी से) बस, अब अपनी जीत ही समझिए।

रसोईदारिन : (सोमा से) सब चौपट कर दिया। बुद्धू कही की। अब तुझे लड़का कौन देगा?

सूबेदारनी : ओह, सिर मे ऐसा दर्द हो रहा है—

(अस्सी से ऊपर उम्रवाला एक जोडा इस बीच शिवदास के पास पहुँच जाता है)

कीर्ति : अ... ग्रहण करता हूँ।

(उनकी समझ में नही आता)

वृद्ध-वृद्धा : ऐं?

कीर्ति : चलो छोड़ो। सुना, तुम लोग विवाह-विच्छेद चाहते हो।

(दोनो सिर हिलाते है)

कितने साल साथ रहे हो?

वृद्धा : हुजूर, पचास साल।

कीर्ति : तो अब विच्छेद क्यों चाह रहे हो?

वृद्ध : हुजूर, हममे अब पटती नही।

कीर्ति : कब से नही पट रही है?

वृद्ध-वृद्धा : पहले दिन से हुजूर।

कीर्ति : हूँ, टेढ़ा मामला है। सोच-समझकर फैसला देना होगा। बैठो। ए कौन है, बच्चे को जल्दी से ले आओ।

(जरा देर पहले दो सिपाही आकर खड़े हुए थे। वे भीतर जाते है)

(सोमा से) विचार के सम्बन्ध मे तुम्हारे खयाल बड़े ऊँचे है। मुझे विश्वास नही कि वह लड़का तुम्हारा है। अच्छा मान लो, होता भी तो क्या तुम नहीं

चाहती कि वह राजा का बेटा हो जाय? कह दो कि वह तुम्हारा लड़का नही है—सुख से राजमहल में रहेगा। घुड़साल मे ढेरों घोड़े, दरबार मे अनेक अमीर-उमराव, किले मे बहुत सारे सिपाही, दरवाजे पर ढेरो भिखमंगे—सब होंगे। क्या तुम यह सब नही चाहती?

(सोमा और कीर्तिचाद के अलावा सभी लेट जाते हैं, पेट के बल। अब वे सभी सूत्रधार बन गये हैं। पहले उनमे से एक का स्वर सुनायी पड़ता है, फिर दूसरे हर पक्ति को एक साथ दोहराते है। सोमा के चेहरे पर भाव आते-जाते रहते हैं। कीर्ति की नजरें सोमा पर टिकी हैं)

सूत्रधार : सुनिए। लड़की के मन में जो कुछ आया, वह उसने कहा नही। उसे ही सुनिए।

मन में आया—यदि वह सोने के जूते पहनेगा
तो बन जायेगा हिंस्र पशु
उसका मन हो जायेगा काला
मेरे मुँह पर हँसेगा वह।
जितनी ही शक्ति बढ़ेगी उसकी, मन उतना ही सख्त होगा।
इससे तो अच्छा है, भूख उसकी दुश्मन हो, भूखे हों दोस्त।
डरे काली रात से वह
और करे खोज वह दिन की उजली रोशनी को।

कीर्ति : (तनिक रुककर) लग रहा है—तुम जो कहना चाहती हो वह मै समझ गया।

(सभी उठकर अपनी-अपनी भूमिकाओं में यथास्थान खड़े हो जाते है)

सोमा : मैं उसे नही छोड़ूँगी। मैने उसे पाला-पोसा है, वह मुझे ही जानता है।

(सिपाही भानु को लाते हैं)

सूबेदारनी : आ हा हा, फटे कपड़े पहने है।

सोमा : अच्छे भी है। बदलने का समय ही नही दिया।

सूबेदारनी : सूअरो के बाड़े मे रखा था उसे।

सोमा : (गुस्सा होकर) सूअर कौन है यह तो समझ में आ ही रहा है। उसे कहाँ फेंक गयी थी तुम ?

सूबेदारनी : क्या ? इतनी हिम्मत ? बदमाश, हरामजादी, कुतिया, छिनाल। इसे चाबुक लगानी चाहिए।

(वकील और कर्मचारी सूबेदारनी को खीचकर हटाते है, रसोईदारिन सोमा को सम्हालती है)

कर्मचारी : आपने वचन दिया था कि—

वकील : धर्मावतार, मेरे मुवक्किल की मानसिक स्थिति का विचार करके—

कीर्ति : फरियादी और आसामी, अदालत ने आप लोगो की बातें सुनी। और उन बातो से वह किसी फैसले पर पहुँचने मे असमर्थ है। इसलिए, विचारक की हैसियत से अब मुझे ही लड़के के लिए एक माँ चुन देनी होगी। सरकारी वकील, एक खड़िया ले आओ। यहाँ जमीन पर एक गोला बनाओ।

(शिवदास गोला बनाता है)

अब लड़के को लाकर इस घेरे मे खड़ा करो। आप लोग आइए, दो ओर खड़ी हो जाइए, घेरे के बाहर।

आप वह हाथ पकड़िए, आप वह दूसरा।

(उन दोनो को भानु का हाथ पकडाकर सिपाही हट जाते हैं)

अब जो खीचकर बच्चे को घेरे के बाहर ला सकेगी, वही बच्चे की असल माँ होगी।

कर्मचारी : धर्मावतार, आपत्ति है। लड़के के साथ बहुत बड़ी सम्पत्ति की मिलकियत का सवाल जुड़ा है। इस विचित्र ढग से मामला तै करना ठीक न होगा।

वकील : फिर मेरे मुवक्किल मे उतनी शारीरिक ताकत भी नही, वे इस छोटी जाति की औरत की तरह मेहनत करने की आदी नही।

कीर्ति : दिखने मे तो काफी हृष्ट-पुष्ट लग रही है। चलिए, खीचिए।

(सूबेदारनी खीचकर ले जाती हैं। सोमा ताकती रह जाती है)

क्या हुआ, तुमने खीचा नही ?

सोमा : मैने पकड़ा ही नही।

वकील : कहा था न हुजूर, खून का सम्बन्ध।

सोमा : हुजूर, मैने जो कुछ कहा था, सब वापिस लेती हूँ। माफी चाहती हूँ। उसे कुछ और दिनों के लिए मेरे पास रहने दीजिए। वह बहुत-सी बाते बोल पाता है, उसे कुछ और बातें सिखाना चाहती हूँ।

कीर्ति : अदालत को गलतफहमी मे रखने की कोशिश मत करो। मैं शर्त लगा सकता हूँ—तुम खुद ही बीस शब्द से ज्यादा नहीं जानती, उसे क्या सिखलाओगी ? खैर, छोडो पूरी तरह निश्चित होने के लिए परीक्षा एक

बार और की जा सकती है।

(सूबेदारनी से भानु को लेकर एक बार और घेरे में खड़ा करता है)

चलिए, पकड़िए। खीचिए।

(इस बार भी सूबेदारनी खीच ले जाती है)

सोमा : (दुखी मन से) मैने उसे पाला-पोसा है, क्या इसलिए कि उसके दो टुकड़े कर दूँ। मुझसे यह न होगा।

कीर्ति : (सूबेदारनी के हाथ से भानु को लेकर) और इस तरह असल माँ कौन है, इसका फैसला अदालत कर सकी।

(सूबेदारनी खुशी-खुशी आगे बढती है पर कीर्ति भानु को सोमा को देता है)

लड़के को लेकर यहाँ से रफू चक्कर हो जाओ। मेरी सलाह है कि इस शहर मे और मत रुको। और आप लोग भी रवाना होइए नही तो झूठी गवाही देने के अपराध मे बड़ा जुर्माना हो जाएगा। सम्पत्ति सरकार अपने कब्जे मे लेती है। उससे लोहारपाड़ा के जले घरों की मरम्मत होगी। बच्चों के खेलने के लिए बगीचा बनाया जायेगा। बगीचे का नाम होगा—कीर्तिचाद बाग।

(सूबेदारनी बेहोश-सी होने लगती हैं। वकील और कर्मचारी उसे पकड़कर बाहर ले जाते हैं। सिपाही भी जाते है। सुमन सोमा के पास आता है। कीर्तिचांद चोगा उतारता है)

बडा गरम लग रहा है। यह सब काम मेरे बस का नहीं। अरे हाँ, वह विवाह-विच्छेद वाला मामला—शिवदास एक कागज दो तो।

(कुर्सी पर कागज रखकर लिखता है। लिखकर शिव-
दास को देता है)

चलो, अब चलकर जरा खानपान (नशापानी) किया जाय।

शिवदास : (कागज पढकर) यह क्या ? इसमे बुड्ढा-बुढ़िया के बारे में तो कुछ है नही। यह तो सोमा और उसके पति के विवाह-विच्छेद का हुक्मनामा है।

कीर्ति : सच ? गलत नाम लिख दिया ? च च च च। अब क्या किया जाय ? अदालत का हुक्म तो बदला नहीं जा सकता। ऐसा हो तो फिर कानून कैसे टिका रहे ? (वृद्धा-वृद्धा से) ठीक है, चलो, तुम लोग भी हमारा साथ देना।

(वृद्ध-वृद्धा और शिवदास का प्रस्थान। रसोईदारिन भी जाती है। कीर्ति जाते-जाते रुककर सोमा और सुमन के पास आता है)

तुम लोगों से मुझे दस और तीस—कुल चालीस टंका पाना है।

(सुमन खुशी-खुशी चालीस टंका देता है)

सुमन : हुजूर, सस्ते में ही निबटा।

कीर्ति : टंका मेरे काम आयेगा।

(आगे बढ़ता है)

सुमन : कहते है न कि अन्त भला तो सब भला।

कीर्ति : (घूमकर) और यह भी तो कि किनारे लगते-लगते नाव डूब सकती है। झटपट नौ दो ग्यारह हो जाओ।

(जाता है। सोमा और सुमन आगे बढते हैं)

सोमा : भानु तुम्हें कैसा लगता है ?

सुमन : सोचने दो जरा—ठीक ही है।

सोमा : पता है, उस दिन क्यों उठा लिया था ? उस दिन हमारा-तुम्हारा ब्याह तै हुआ था न इसलिए। नहीं तो शायद न ले पाती।

(प्रस्थान। दूसरी ओर से सूत्रधार घुसते हैं, गोलाकार घूमते हैं। अब सभी सूत्रधार बन गये हैं, बाँटकर पंक्तियाँ बोलते हैं)

सूत्रधार लोग : और फिर देखा नही किसी ने कीर्तिचांद को
उड़ गया जैसे कपूर सा कीतिचांद,
लेकिन याद रखा उसे लोगो ने अरसे तक
याद रखा उसके अटपटे विचार को।
मगर हम, जिन्होने आज यहाँ नाटक खेला,
नाटक देखा
हमें लिख रखना होगा अपने दिल के पन्ने पर
बात एक सार भरी, ज्ञानभरी, बहुमूल्य।
क्या बात ?
जो कुछ है अच्छा, वह मिलेगा उसे ही जो उसकी
कद्र करता हो।
बच्चा उस माँ का होगा प्यार करती है जो।
गाड़ी गाड़ीवान की, खेत तो किसान का
जो करे मशक्कत चीज होगी उसकी ही
यही है विचार यही फैसला है
खड़िया के घेरे का।

• •